



गोट्या



ना. धो. ताम्हनकर

मूल मराठी से अनुवाद
सुरेखा पाणंदीकर



साहित्य अकादेमी

1. गोट्या

“मत मारो मुझे, मत मारो,” रोते हुए लड़का कह रहा था ।

“क्यों न मारूँ, और मारूँगा, मेरा दिया खाते हो और मेरा ही नुकसान करते हो ... यह ले और ले ।” कहकर बुरी-बुरी गालियाँ देते हुए मारने की आवाज़ आ रही थी । यह झमेला हो रहा था “दिलखुश” होटल के पास । चारों तरफ़ जनता खड़ी तमाशा देख रही थी । मैं भी भीड़ में घुसा । देखा, दिलखुश होटल के मालिक वासुनाना एक दस-ग्यारह साल के लड़के को पीट रहे थे । इतने लोग खड़े थे पर कोई भी उसे छुड़ा नहीं रहा था । लड़का पिटाई से तड़पकर रो रहा था । मुझसे रहा नहीं गया ।

“वासुनाना, यह क्या कर रहे हो ? आप जैसे बुजुर्ग को इस तरह एक छोटे बच्चे को पीटना शोभा नहीं देता ।”

“हाँ, हाँ, मुझे सीख दे रहो हो । यह लौंडा है ही मार के काबिल । इतने दिन इसको खिलाया-पिलाया और मेरा ही कबाड़ा करने पर तुला है । यह ...”

“हाँ, हाँ बस गालियाँ बहुत हो चुकीं,” मैंने टोका ।

“जा अपने गाँव, निकल जा, अगर दुबारा मेरी दुकान पर आया तो पैर तोड़ दूँगा,” कहकर वासुनाना अंदर चले गए ।

वासुनाना के जाते ही लोगों की चुप्पी टूटी ।

“यह वासुनाना आदमी नहीं राक्षस है राक्षस !” एक बोला ।

“पानी-सी चाय पिलाकर पैसा जो कमा रहा है । उसी पैसे की गर्मी है उसे ।” दूसरे ने राय दी ।

“उस लड़के का कसूर भी तो देखो ! वासुनाना को ही क्यों कोस रहे हो ?”

जब सड़क पर भूखा मर रहा था तब वासुनाना ने ही सहारा दिया था, तो फिर वासुनाना को भला-बुरा क्यों कहते हो ?” एक सज्जन बोले ।

“हाँ सहारा दिया, पर मार के बिना कभी खाना भी तो नहीं दिया आपके धर्मात्मा ने उसे ।” किसी ने कहा ।

दुनिया भर की बातें हो रही थीं । पर असलियत क्या थी और क्यों बखेड़ा हुआ, यह मैं समझ नहीं पा रहा था । आखिरकार मैंने लड़के से ही पूछा, “बेटा, किसके लड़के हो तुम ? कहाँ रहते हो ?”

“इसी होटल में था मैं आज तक ।” सिसकियाँ भरते हुए लड़के ने जवाब दिया ।

“पर तुम्हारा और कोई तो होगा यहाँ ?” मैंने पूछा ।

“आप हो ना !” वासुनाना की तरफ़दारी करनेवाला बोला तो सबने ठहाका लगाया ।

“अच्छा, अभी तुम मेरे साथ चलो ।” मैं उसे अपने साथ ले आया ।

मैंने घर आकर पत्नी को सारा किस्सा सुनाया । उसे भी दया आ गई । लड़के से बिना कुछ पूछे, उससे हाथ-मुँह धोने के लिए कहा ।

“रो नहीं बेटा ! आँसू पोंछ डालो, डरने की कोई बात नहीं । अब वासुनाना यहाँ आकर तुम्हें मार नहीं

सकते । चुप हो जाओ ।” उसकी पीठ सहलाते हुए मेरी पत्नी ने कहा ।

वासुनाना के डर से नहीं, परन्तु मेरी पत्नी की ममता, से उसे रोना आ रहा था । आज तक उसे ऐसे प्यार या ममता का अनुभव ही नहीं था और इसलिए खुशी या प्यार से आँसू आ रहे थे ।

एक-दो घंटे में ही वह घर में घुल-मिल गया । सुमा और उसकी दोस्ती भी हो गई । रात को जब मैं घर लौटा तो सुमा दौड़कर मेरे पास आई और बोली, “दादा, आज मैंने इस गोदया पर अंताक्षरी की बाज़ी मारी है । इसे तो एक भी कविता नहीं आती ।”

“अच्छा तो तुम्हारा नाग गोदया है !” मैंने पूछा ।

“हाँ ।” जवाब मिला ।

“गोदया ... यह कैसा नाम है ? गोदया का मतलब तो होता है कंचे ।”

“पर मेरा असली नाम गोदया नहीं है सुमा दीदी । जब मैं स्कूल जाता था तब मेरा नाम था विश्वास । पर लोग न जाने क्यों मुझे गोदया बुलाने लगे ।”



‘गोट्या, तुम्हारे पिताजी कहाँ रहते हैं ?’ मैंने पूछा ।

‘पिताजी, पिताजी कौन ?’

जब मैंने उसे बताया कि पिताजी का मतलब है बाप तो उसने जवाब दिया, ‘मेरा न पिताजी है न माँ ।’

‘पर हर एक लड़का-लड़की के माँ-पिताजी होते हैं, तुम्हारे क्यों नहीं हैं ?’ सुमा पूछने लगी ।

इस पर गोट्या क्या जवाब देता ! वह सहमकर मेरी तरफ़ देखने लगा और बोला, ‘माँ और पिताजी तो नहीं हैं, लेकिन गाँव में चाचा-चाची हैं ।’

‘हो सकता है, तुम्हारे माँ और पिताजी तुम्हारे बचपन में ही गुज़र गये हों और तुम्हारे चाचा-चाची ने तुम्हें पाला-पोसा हो ।’

लेकिन गोट्या तड़क से बोला, ‘पोसा कहाँ ... कोसा है, उन्हीं ने तो मुझे वासुनाना को दे दिया था ।’

‘क्यों ?’ सुमा ने पूछा ।

तब गोट्या ने बताया कि साखरपारा नाम के गाँव में उसके चाचा का घर है । उन्हीं के साथ वह रहता

आ रहा था । चाचा के पास थोड़ी-बहुत खेती थी और पूजा-पाठ से भी अच्छी आमदनी होती थी । चाची अपने बच्चों को तो अच्छा खाना देती, अच्छे कपड़े पहनाती और इधर गोट्या भूखे पेट पड़ा रहता, जूठन खाता और उत्तारन पहनता । ऊपर से पड़ती मार !

एक दिन गोट्या ने जब चाची से बिना पूछे कठहल की मीठी गिरी लेकर खा लिया तो चाची ने गरम कड़छी से उसका हाथ जला डाला । गोट्या जब चीखकर रोने लगा तो पड़ोसन बौड़ी आई । वह गोट्या के जले हाथ देखकर बिगड़ने लगी, ‘अरे इसके बाप के पैसों पर गस्ती कर रहे हो तुम सब और उसी के बेटे पर यह जुल्म ढा रहे हो ! कुछ तो पाप-पुण्य का खयाल करो ! शरम करो !’ यह सुनकर चाची चुपचाप अंदर चली गई ।

उसके कुछ ही दिनों बाद एक दिन चाचा बोले, ‘चल गोट्या, मैं तुझे अच्छे स्कूल में भरती करा दूँ ।’

कोल्हापुर स्टेशन पर उनकी मुलाकात वासुनाना से हुई । चाचा ने बातों-बातों में वासुनाना को बताया कि वे किस तरह शरीबी की हालत में जी रहे हैं । और गोट्या को पेटभर खाना देना भी उन्हें दूभर हो रहा है । अगर कोई पुण्यात्मा इसका भार उठा ले तो इसको जीवन मिल जाय !

गोट्या कुछ समझ नहीं पा रहा था । वह

सहमा-सहमा बैठा था । जले हुए हाथ का दर्द तो था ही ! उसके चेहरे के करुण भाव देखकर वासुनाना को दया आई और वह गोट्या को अपने साथ यहाँ ले आए । कहाँ का स्कूल और कहाँ की पढ़ाई ! उन्हें तो मुफ्त का नौकर मिल गया था दिलखुश होटल के लिए ।



गोट्या था तो बुद्धिमान ! स्कूल न सही, होटल में आनेवाले ग्राहकों और आस-पास रहनेवाले ड्राइवरों से वह काफ़ी बातें सीख गया था । होटल में बजनेवाले फ़िल्मी गाने उसे मुँहजुबानी याद हो गए थे । और लोगों की नकल उतारने में भी वह तेज़ था । ड्राइवर वगैरह उसे फ़िल्मी गाने और नकल उतारने के लिए बढ़ावा देते । एक दिन रास्ता चलनेवाली औरत की नक़ल उतारने के लिए लोगों ने उसे उकसाया । जब नक़ल उतारने पर वह औरत गुस्से से उनके पास पहुँची तब सब के सब लोग लापता हो गए और बेचारा गोट्या उसके हाथ लगा और उसने गोट्या को कस के चाँटे लगाए ।

मार तो जैसे खाने के साथ की खुराक थी गोट्या के लिए ! किसी-न-किसी बहाने वासुनाना उसे चाँटे रसीद कर देते । कभी थोड़ी-सी चाय गिर गई तो, कभी मेज़ ठीक से साफ़ नहीं की तो, कभी ग्राहक को ज्यादा सब्ज़ी परस दी तो । उन्हें तो बस मारने के लिए छोटे-से-छोटे बहाने की ज़रूरत भर थी !

‘पर आज इतना क्यों मारा ? बात क्या हुई ?’ मैंने पूछा ।



‘सुबह कुछ लोग खाने आए । उन्होंने पूछा, खाने के लिए क्या है ? तो लड्डू, चकली, चिवड़ा, पकौड़े, मैंने गिनवा दिए ।’

‘गरम पूरी-भाजी है ?’ उन्होंने पूछा ।

मैंने बताया, ‘हाँ है, कितनी लाऊँ ?’

‘सब के लिए एक-एक प्लेट,’ ग्राहकों ने कहा ।

गोट्या ने पूरी-भाजी की प्लेट रखी ।

“यह पूरी-भाजी तो ठंडी और बासी है, हमने तो गरम-गरम भाजी और ताज़ी पूरी माँगी थी ।” ग्राहकों ने कहा ।

“कल रात जब बनाई तो भाजी गरम थी ।” गोदया ने कहा ।

वासुनाना ने यह जवाब सुना । वह आगबबूला हो गए ।

“और यह पूरी है या चमड़ा !” दूसरे ग्राहक ने टोका

“आप कल सुबह आते तो आपको यही पूरियाँ कढ़ाई से उतरी गरम-गरम मिलतीं ।” गोदया ने जवाब दिया ।

“तो, यह सारा बासी खाना तू ही खा ले ।” कहकर सारे ग्राहक खाना जूठा कर बिना पैसे दिए चले गए ।

“उनके जाने की देर थी कि वासुनाना ने अपना मुँह और हाथ चलाना शुरू कर दिया । अगर आप नहीं आते तो न जाने आज क्या होता ?” गोदया ने कहानी समाप्त कर दी ।

रात को खाना खाते समय मेरी पत्नी ने गोदया से कहा, “क्या तुम हमारे यहाँ हमेशा के लिए रहोगे ?”

गोदया की आँखों में फिर डर छलकने लगा । वह बोला, “क्या आप फिर मुझे घर से निकाल देना चाहती हैं ? मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ, पैर पकड़ता हूँ, मुझे यहाँ से मत निकालिए !” और सचमुच ही गोदया ने खाना छोड़कर मेरे पत्नी के पैर पकड़ लिए ।

“यह क्या कर रहे हो गोदया, हम तुम्हें निकालना थोड़े न चाहते हैं ! मैं तो यही पूछ रही हूँ कि क्या तुम्हें अच्छा लगेगा यहाँ रहना ?” मेरी पत्नी ने उसे उठाते हुए कहा ।

“सुनो गोदया, अगर हमारे यहाँ रहना है तो हमारा कहना मानना पड़ेगा ।” मैंने कहा ।



“हाँ, हाँ, सारा कहना मानूँगा, जो काम कहोगे करूँगा, बर्तन साफ़ करूँगा, आप सबके कपड़े धोऊँगा, झाड़ू-पोछा लगाऊँगा ।” गोदया के इस जवाब से अब मेरी पत्नी की आँखों में आँसू छलक आए ।

“नहीं नहीं बेटा, ऐसे काम नहीं करने पड़ेंगे । तुम्हें यहाँ सुमा का भाई बनकर रहना है । और सुमा बेटी, गोदया के साथ लड़ना-झगड़ना नहीं !”

“अगर गोदया लड़ेगा तो मैं भी लड़ूँगी ।” सुमा ने तपाक से कहा ।

सुबह होते ही जब गोदया को नहा-धोकर दूध पीने के लिए बुलाया तो उसे अजीब सा लगा । क्योंकि दाँतुन करना, समय पर नहाना-धोना और फिर गरम-गरम दूध, यह सब तो अनजाना था उसके लिए । वासुनाना के यहाँ उठते ही काम पर लगाया जाता । और मिलती भी तो बची-खुची चाय ।

बाद में जब मैं उसे बाजार ले गया और नये कपड़े और स्कूल के लिए स्लैट और किताबें दिलवाई तो आम बच्चों की तरह गोदया भी खुशी से नाचने लगा ।

स्कूल में उसकी भर्ती हो गई । गोदया के मास्टर जी को मैंने गोदया के बारे में बताकर उसका ध्यान रखने के लिए कहा ।

गोदया की बुद्धि तेज थी । वह पाठ जल्दी याद कर लेता । स्कूल का जो काम मिलता, समय से पूरा कर लेता । देखते-देखते किताब के सारे पाठ उसे मुँहजुबानी याद हो गए । मास्टर जी का कहना भी वह

मानता था । लेकिन एक दिन इस आज्ञा-पालन की उसने हद ही कर दी ।

मास्टर जी ने शिकायत की, “गोदया बहुत शैतानी करता है, उसने एक लड़के के चेहरे पर स्याही पोत दी ।”

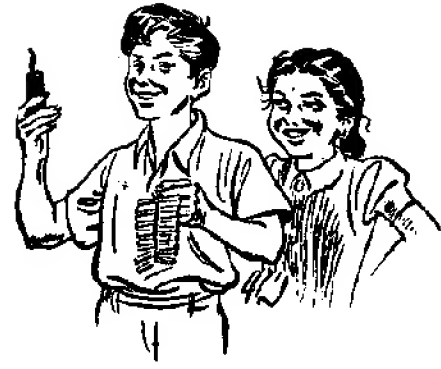
जब मैंने गोदया से पूछा कि ऐसा क्यों किया, तब गोदया ने कहा, “दादा, आप ही ने तो कहा था, कि मास्टर जी का कहना हमेशा मानना ! गोपू ने कोई भी सवाल नहीं किया था, तब मास्टरजी ने गोपू से कहा, मुँह काला कर अपना । खाने की लुट्टी होने तक जब गोपू ने अपना मुँह काला नहीं किया और मास्टरजी का कहना नहीं माना तब मैंने स्याही से उसका मुँह काला कर दिया और मास्टर जी का कहना उससे मनवाया ।”



इस पर मैं क्या बोलता, मेरी समझ में नहीं आया। शायद इसीलिए मैं चुप रह गया।

गोट्या की शैतानी किसी को तकलीफ पहुँचाने के लिए नहीं थी पर बड़ों की कही हुई बात को ठीक से न समझने से गलती हो जाती थी। पर गोट्या की तेज़ बुद्धि और हुनर सब मानते थे।

धीरे-धीरे गोट्या स्कूल और घर के माहौल में ऐसा रम गया जैसे वह यहीं पैदा हुआ हो। वह मेरी बेटी सुमा की तरह मुझे दादा और मेरी पत्नी को भाभी जी कहता और हम दोनों को बड़ा प्यार और हमारा आदर करता। सुमा तो जैसे उसकी जान थी।



2. त्योहारों का दिन

गोट्या केवल स्कूल और हमारे घर में ही नहीं हिल-मिल गया था, पास-पड़ोस में भी गोट्या अपनी करतूतों के नाते मशहूर हो गया। गाँव के बड़े जमींदार के बगीचे से सुमा के लिए जुही-गुलाब के फूल ले आता तो कभी पड़ोस की लड़ाकी मौसा के घर में बिल्ली छोड़ देता। लेकिन यही लड़ाकी मौसी जिससे सभी डरकर दूर ही रहते थे, गोट्या की एक करतूत से बड़ी खुश हुई।

गणेश पूजा के दिनों, मैंने सुमा और गोट्या को पटाखे ला दिये और उनसे वादा लिया कि वे केवल आरती के समय ही पटाखे छोड़ेंगे और कोई शैतानी नहीं करेंगे।

सुबह सात और रात के आठ बजे मैं पूजा और आरती करता था। और सुबह सात बजे ही हमारे गाँव के बड़े लालाजी सेठ डूंगरचंद ताँगे में बैठ, हमारे घर के आगे से निकल कर अपनी दुकान पर जाते थे। डूंगरचंद यानी पहाड़चंद नाम उन पर सही जँचता था। वे इतने मोटे थे कि ताँगे पर खुद नहीं चढ़ पाते थे। उन्हें दो नौकर मिलकर चढ़ाते थे।

मैंने आरती शुरू की। मेरी पत्नी मेरे साथ आरती गा रही थी। गोट्या और सुमा आँगन में पटाखे जला रहे थे।

ऑ ... ठंय ... तीन-चार पटाखों की आवाज़ आई और उसके फौरन बाद “लाला जी मर गये” की चिल्लाहट सुनाई पड़ी।

“अरे पहाड़ गिरा, डूंगर गिरा” शैतान बच्चों ने शोर मचाया।

“मरी गयो रे लालाजी, मरी गयो,” लालाजी की दर्दभरी चीख इस शोर में छुप गई। पटाखे के आवाज़ से ताँगे का घोड़ा डरकर उछलने लगा। पीछे बैठे लालाजी कहाँ सम्भाल पाते अपने को? घोड़ा ज्यों ही डरकर अपने पिछले दो पैरों पर खड़ा हुआ, लालाजी गिर पड़े। ताँगेवाला घोड़े को शांत करने में लग गया।

बड़ी मुश्किल से लोगों ने लालाजी को ताँगे में

दुबारा बिठाया। ताँगे वाला हमारे दरवाज़े के सामने बच्चों पर चिल्ला रहा था। जब मैं आरती पूरी करके बाहर आया तब वह कहने लगा, “आपके बच्चों के पटाखों की वजह से घोड़ा डर गया, अगर लालाजी को कुछ हो जाता तो? पता नहीं, आजकल के बच्चे कैसे हैं! और माँ-बाप भी उन्हें नहीं टोकते?” ताँगेवाला बके जा रहा था।

“मैंने अपने आँगन में पटाखे छोड़े, मुझे क्या पता कि लाला जी का ताँगा जा रहा है और घोड़ा हड़क जायेगा।” गोट्या ने कहा। पर उसकी काँपती हुई आवाज़ और सुमा का डरा हुआ चेहरा बता रहा था कि शैतानी उन्होंने ही की होगी!

बच्चों की शैतानी पर उन्हें मारना नहीं चाहिए, शैतानी नहीं करेंगे तो वे बच्चे कैसे हुए? उन्हें डाँटना भी नहीं चाहिए, यह मेरा मत था, पर लालाजी और ताँगे वाले को शांत करने के लिए गुस्से का नाटक करना पड़ा। मैंने तेज़ आवाज़ में कहा, “ठीक है, अंदर चल, तेरी शैतानी का मजा चखाता हूँ!”

गोट्या मेरे गुस्से के नाटक को सच समझ कर डर गया। उसकी आँखों में आँसू भी छलक आए। त्योहार के दिन खुशी और आनंद से नाच रहे बच्चों को रोता देख, मुझे अपने पर गुस्सा आने लगा, लेकिन नाटक करना मेरी मजबूरी थी।

“ले बेटा यह ले ...” कहकर मौसी ने चाँदी की कटोरी से प्रसाद का लड्डू गोदया को देना चाहा ।

गोदया मेरी पत्नी की तरफ देखने लगा ।

“अरी बहू, क्यों मना कर रही है । कह दे ना इसे लेने के लिए ।” मौसी बोली ।

“मैं कहाँ मना कर रही हूँ । ले, ले, गोदया मौसी का दिया प्रसाद खा ले, मौसी को तसल्ली होगी ।”

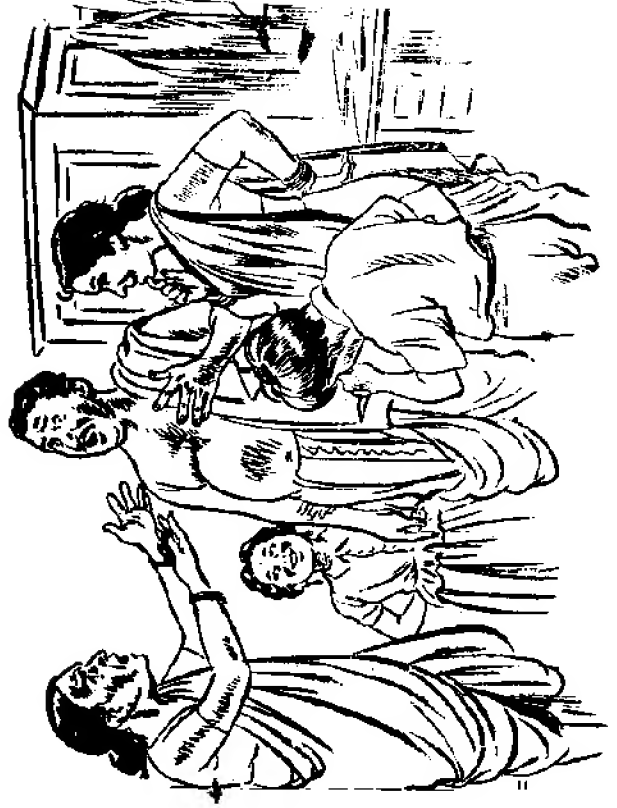
“पर भाभी, सुमा कहाँ है ?” गोदया ने पूछा ।

“अच्छा तो उस छोकरी में जान अटकी है तेरी । पर मैं यह इनाम तुझे तेरी बहादुरी के लिए दे रही हूँ ।” मौसी ने कहा ।

“पर मौसी, पटाखे तो सुमा के थे । अपने पटाखे तो मैं खत्म कर चुका था । सुमा ने अपने पटाखे दिये थे मुझे और उसी पटाखों से घोड़ा डर गया था और लालाजी गिर पड़े थे,” गोदया ने खुलासा किया ।

“तब तो सुमा को भी इनाम मिलना चाहिये । ऐसा करो, अभी तुम यह लड्डू बाँट के खा लो और थोड़ी देर बाद आना, तब मेरी पूजा खत्म हो जाएगी । फिर मैं दोनों को खाने के लिए और चीज़ें दूँगी ।” मौसी ने कहा ।

“पर मौसी इस तरह बच्चों को इनाम देना क्या ठीक है ?”



“ओ हो, तो अब आपको इनाम देना बुरा लग रहा है ? जब खुद छोटे थे तो छोटे-छोटे काम के लिए भी बादाम, छुहारा, मिश्री इनाम लिए बिना मांगते नहीं थे । कितना बिगड़ गये तुम उन इनामों से ?” जाते-जाते मौसी बोली फिर पलटी जैसे कुछ याद आ गया हो । “अच्छा याद आया, इस साल नवरात्रों में यही पंडित और सुमा कन्या जीमेंगे मेरे यहाँ ।”

“पर मौसी इस पंडित के पास रेशमी धोती नहीं ! फिर कैसे जीमेगा यह पंडित ?”

“जब तुम बड़ों ने ही धर्म छोड़ दिया तो बच्चों का क्या, उनके पास कहाँ से होगी रेशमी धोती । मैं दूँगी रेशमी धोती गोदया के लिए ।”

“पर मौसी, दूसरे के कपड़े पहनने से चमड़ी के रोग लग जाते हैं । मास्टर जी ने बताया था, मैं नहीं पहनूँगा दूसरे की धोती ।” गोदया ने कहा ।

“देखा मौसी, कैसा कठिन सनकी पंडित है यह । कैसे निभेगी आपकी इसके साथ ?” मैंने कहा ।

“खूब निभेगी । ऐसे पचास पंडितों को निभा सकती हूँ मैं । अच्छा गोदया, मैं नई बनारसी रेशमी धोती ला दूँगी तेरे लिए । और इस कन्या को रेशमी घाघरा चोली ।” कहकर मौसी चली गई ।

शैतानी के लिए बच्चों को सजा मिलती है पर हमारे गोदया को मिला इनाम और साथ में सुमा को भी । और वह भी जिससे सारा गाँव डरता है उस मनु मौसी से ।

नवरात्र और दशहरा गजे में गुज़रा । दशहरे के दिन गोदया और सुमा को रेशमी धोती, घाघरा-चोली पहनाकर मौसी हमारे यहाँ आई, बोली, “देख कैसे प्यारे लग रहे हैं बच्चे । किसी की नज़र न लग जाए ! नज़र उतारना इनकी, समझी बहू ।”

अब तक तो मौसी का प्यार बच्चों पर उमड़ रहा था पर मौसी का क्या भरोसा ! पता नहीं कब किस बात पर चिढ़ जाय और फिर उनसे राम ही बचाए । उस पर गोदया का नटखट स्वभाव ! हम डर ही रहे थे । और पाँच-छः दिनों में ही हमारा डर सच सा साबित हुआ । छुट्टी का दिन था । दोपहर के तीन-चार बजे होंगे । बच्चे बाहर खेल रहे थे कि एक मोटी-सी बिल्ली हमारे आँगन में कूद पड़ी । बस गोदया और बच्चे उसके पीछे पड़ गए । कंकड़ उठाकर उसे मारने लगे । पर बिल्ली बच्चों से ज्यादा चालाक थी । वह पास के घर के आँगन में घुसी । दरवाज़ा बंद था । उसने खिड़की में से छल्लाँग लगाई और सीधी घुस गई मौसी की रसोई में ।

“गोदया, यह क्या किया तुमने ? बिल्ली रोज़ दूध चट कर जाती है, मौसी हमेशा गालियाँ देती है

बिल्ली को । और अब तेरी वजह से बिल्ली, मौसी की रसोई में घुसी है । और मौसी गई होगी मंदिर में कथा सुनने । जब आएगी तब क्या होगा ?” सुमा को चिंता हुई ।

‘घबरा नहीं सुमा ! अगर बिल्ली मेरी वजह से अंदर गई है तो बाहर भी मैं निकालूँगा ।’ और तभी उसे तरकीब सूझी ।

सामने के मोटर गेराज से मोटर धोने वाला बड़ा-सा पाइप और पंप ले आया गोदया । बाल्टी में पानी भरकर उसमें से पंप से पानी का फव्वारा बिल्ली पर मारने की योजना बनाई गई । पर खिड़की काफ़ी ऊपर थी । ‘ठीक है मैं खड़ा रहता हूँ ! मेरे कंधे पर चढ़कर रंगनाथ तू अंदर पानी का फव्वारा चला । डरकर बिल्ली बाहर निकल आएगी ।’ गोदया ने कठिनाई दूर की । ‘बंदू तू पंप को कसकर पकड़ना बाल्टी में, और फिर चलाना ऊपर-नीचे ।’ गोदया ने कप्तानी कर सबको काम बाँट दिया । और खिड़की के नीचे रंगनाथ को कंधे पर ले खड़ा हुआ ।

फर-फर पंप चलते ही रसोई घर में बारिश हो गई ।

बेचारी मौसी, बिल्ली की बजाय फव्वारे का पानी उस पर ही बरसा । दोपहर को रसोई घर में वह लेटी



थी, क्योंकि वहाँ ठंडक थी । गरमी की दोपहर में वहाँ नींद अच्छी आती थी । पानी उसके मुँह पर गिरा । वह हड़बड़ाकर उठ बैठी । कहीं यह भूत-पिशाच तो नहीं, यह सोचकर डर से चीखती बाहर आई । उसकी चीखें सुनकर लोग जमा हो गए ।



बाल्टी का पानी खत्म हो गया था । और बारिश रुक गई थी । जब लोगों को असलियत मालूम हुई तो वे खूब हँसे ।

‘बुढ़िया को खूब नहलाया !’ कहते हुए वे चल पड़े अपने-अपने घर । मौसी का गुस्सा अब सातवें आसमान तक पहुँचा । वह बच्चों पर गालियों की बौछार करने लगी । पर बच्चे वहाँ थे कहाँ, जो उसकी गालियाँ सुनते ! वे तो कब के रफूचक्कर हो चुके थे ।

दिनभर मौसी को पता नहीं लगा कि वह शैतानी किन बच्चों की थी । और अगर कोई उसे कहता भी कि

गोदया की शैतानी थी तो वह विश्वास नहीं करती । क्योंकि जब उन्होंने गोदया से पूछा, ‘‘गोदया तूने तो नहीं पानी बरसाया मुझ पर ?’’ तो गोदया ने बड़े भोलेपन से कहा, ‘‘नहीं मौसी, कसम से, मैंने और सुमा दीदी ने पंप को हाथ भी नहीं लगाया ।’’

और गोदया ने सच तो कहा था । पंप तो बंदू और रंगनाथ ने चलाया था । गोदया ने तो केवल अपने कंधे पर रंगनाथ को खड़ा किया था । इस तरह पंप को हाथ लगाए बिना उसने मौसी को नहला दिया था ।

फिर मौसी को किसी बात का शक न हो, इसलिए गोदया ने मौसी के अनेक छोटे-छोटे काम करके उनका मन जीत लिया । वह रोज़ उनके लिए पूजा के लिए फूल, बेल के पत्ते, तुलसी के पत्ते ला देता । एक दिन जब मौसी नदी पर नहाने का अपना नियम न निभा सकी, तो गोदया ने नदी का पानी कहकर नल के पानी से घड़ा भर कर ला दिया । आखिर नलों में भी नदी का पानी ही तो आता था । इस सेवा का फल भी गोदया को मिला । दीवाली के दिन नहा-धोकर हम नाश्ता करनेवाले ही थे कि मौसी गोदया और सुमा को दीवाली के नाश्ते के लिए बुलाने आई ।

अकेले होते हुए भी भगवान कृष्ण का प्रसाद चढ़ाने के लिए मौसी हर पक्वान बनाती थी । और इस साल भगवान कृष्ण के साथ गोदया और सुमा को भी

मौसी के बनाए स्वादिष्ट पकवान दीवाली के चारों दिन खाने को मिले। शाम को मौसी जाई। रुपये देकर मुझसे बोली, “इसके पटाखे, अनार और फुलझड़ि लाना।”

“मौसी आप फुलझड़ियाँ जलाओगी?” मैंने आश्चर्य से पूछा।

“हाँ, हाँ, मैं अब इस उम्र में फुलझड़ियाँ, पटाखे चलाऊँगी और लड़कियों के साथ किकली खेलूँगी और नाचूँगी भी। तू भी आना मेरे साथ नाचने। शरम नहीं आती मेरा मज़ाक करते! सुनो गोदया और सुमा, रोज़ शाम को आना और पटाखे चलाना। ये दो-चार दिन ही नहीं, तुलसी विवाह तक। समझ गये!”

आम लोगों की दीवाली चार दिन में खत्म होती है, पर गोदया और सुमा की दीवाली अगले पंद्रह दिनों यानी तुलसी-विवाह तक चलती रही।



3. गोदया चौथी कक्षा में

जब से गोदया स्कूल जाने लगा, उसे महसूस होता था कि अपनी कक्षा में वह उम्र में सबसे बड़ा है। उसकी उम्र के बच्चे तो चौथी में ही थे। वह अब पहुँचा था दूसरी में। वैसे तो वह पहाड़े, गणित, भाषा, इतिहास, भूगोल सभी विषयों में अपनी कक्षा से आगे था। चौथी के बच्चों के बराबर उसकी तैयारी थी। पर मास्टर जी उसे चौथी में बिठाने को राजी नहीं थे। और राजी होते भी कैसे? गोदया की शैतानियाँ कुछ कम तो नहीं थीं, जिस दिन स्कूल में इन्स्पेक्टर आए उस दिन गोदया ने कविता इस तरह से शब्दों को तोड़-मरोड़कर पढ़ी थी कि तब से मास्टर जी गोदया से नाराज थे।

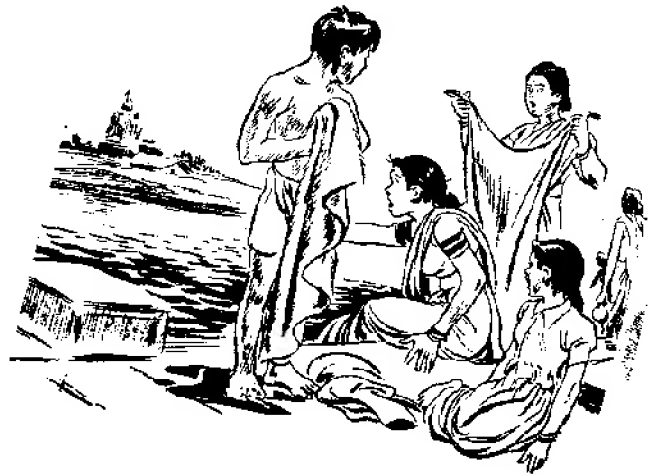
पर गोदया की तकदीर अच्छी थी। मास्टर जी नाराज थे तो क्या हुआ! उसने मास्टर जी की पत्नी का मन ऐसे जीत लिया कि मास्टर जी को गोदया को चौथी में बिठाना पड़ा।

हुआ यूँ कि कार्तिक महीने के एकादशी के दिन मास्टर जी की पत्नी और अन्य औरतें-बच्चे नदी-स्नान के लिए गए थे। हमारे गाँव के पास बहनेवाली यह नदी छोटी ज़रूर थी, पर उसका बहाव काफी तेज़ था। मेरी पत्नी, सुमा, गोदया भी उस दिन नदी स्नान के लिए गए थे। गोदया बड़ा अच्छा तैराक था। वह डुबकियाँ लगाता, छल्लों में मारता, पानी के नीचे तैरकर किसी दोस्त का पैर खींचकर उसे डराता। सुमा को तैरना नहीं आता था, अपनी करतूतों से वह सुमा को बहलाकर लोगों पर अपना रोब जमाना चाहता था। उस दिन भी तैराकी के करतब देर तक दिखाता रहा।

“गोदया बस कर अब!” आखिरकार मेरी पत्नी ने कहा।

“हाँ, बस आ ही रहा हूँ भाभी” और गोदया फिर डुबकी लगाता जा रहा था।

“ठीक है, मत निकल! अगर जुकाम हुआ या कमर में दर्द हुआ न, फिर मत आना मेरे पास!” मेरी पत्नी गुस्से में बोली।



गोदया ने जाना अब और तैरना ठीक नहीं और वह बाहर निकल, तौलिये से बदन पोंछ ही रहा था कि तभी एकदम से चीख-पुकार सुनाई दी—“हाय राम, मेरा लोटा ... बह गया, बह गया, वह मेरी माँ की निशानी था” मास्टर जी की पत्नी चिल्ला रही थी।

तैर रहे लोगों ने लोटे को पकड़ना चाहा, पर नदी के तेज़ बहाव से लोटा आगे-आगे बढ़ता गया। लोगों की भीड़ पीछे-पीछे, लोटा आगे-आगे, इधर मास्टर जी की

पत्नी से एक दूसरी औरत झगड़ा करने लगी जिसके धक्का लगने से लोटा हाथ से नदी में गिर पड़ा था ।

गोट्या ऐसा मौका भला छोड़ता ! वह थोड़ी देर किनारे-किनारे दौड़ा फिर उसने पानी में छलौंग लगा ली ।

“ओफ हो ... गोट्या ! क्या मज़ाक है । सारे लोग इधर लोटा पकड़ रहे हैं और तुम उधर छलौंग लगा रहे हो । लोटा ढूँढ़ने का बहाना बनाकर पानी से खिलवाड़ कर रहा है । ठहर जा तू ! आज तुझे सिखाऊँगी ।” मेरी पत्नी गुस्से से लाल-पीली होने लगी ।

लेकिन गोट्या चालाक था । वह जानता था इस भीड़ में तैरने से लोटा नहीं मिलेगा । लोटा बहकर आगे जा रहा था, आगे छलौंग मारकर ही बहते लोटे को पकड़ा जा सकता था ।

“क्या यही है आपका लोटा ?” लोटा हाथ में लाते हुए गोट्या ने पूछा ।

“हाँ ... हाँ ... भगवान तुम्हारा भला करे । हाय, मेरा लोटा मिल गया ।” कहती हुई मास्टरनी जी ने लपककर लोटा पकड़ लिया । गोट्या डरा-डरा भाभी जी की तरफ देख रहा था । भाभी की आँखों में अब गुस्से की जगह प्यार था, उनके चेहरे पर गर्व था । जो काम बीस-पच्चीस बड़े आदमी और युवक न कर सके वह गोट्या ने कर दिखाया था ।

“मैं नहीं जाता, अब गेरी बारी है पिट्टू तोड़ने की ।” श्याम ने जवाब दिया ।

“जा बेटा, बहुत सारा प्रसाद दूँगी तुझे ।”

“ना, ना, मुझे नहीं चाहिए आपका प्रसाद,” श्याम वहाँ से दौड़कर दूसरी ओर चला गया ।

“लाइये मैं ला देता हूँ,” गोट्या ने कहा ।

उन्होंने तुरंत गोट्या को पहचान लिया ।

“मुझे पता होता कि तू यहाँ है तो इस घमंडी श्याम को मैं कहती ही नहीं । जा बेटा, जल्दी से ले आ ।” गोट्या को पैसे धमाते हुए मास्टरनी वापस आई ।

पूजा समाप्त होने को आई । बस अब तुलसी और श्रीकृष्ण के विवाह के मंत्र पढ़ने थे । पंडित जी जल्दी मचा रहे थे । उनको और घरों में भी जाना था । मास्टर जी को जब पता लगा कि गोट्या को उनकी पत्नी ने भेजा है तब वह झुंझला पड़े । बोले, “वह छोकरा ... तब तो आ चुके तुम्हारे आँवले और इमलियाँ । चलिये पंडितजी, आप शुरू करिये ।”

मास्टरनी जी को बुरा लग रहा था । साल में एक बार तुलसी-विवाह का आयोजन होता है, जिसे वह अच्छी तरह पूरे विधि-विधान से मनाना चाहती थी ।

“क्या यही वह लड़का है जिसे आपने गोद लिया है”, मास्टर जी ने पूछा ।

“हाँ यही है हमारा गोट्या ।” गोट्या को प्यार करते हुए मेरी पत्नी बोली ।

मास्टरनी जी को खुश करने का एक और मौका दूसरे ही दिन गोट्या को मिला । तुलसी विवाह का दिन था । मास्टरनी जी ने सारी तैयारी की । पंडित जी भी आ गए । मास्टर जी रेशमी वस्त्र पहनकर पूजा के लिए तैयार बैठे थे । तभी मास्टर जी ने पूछा, “आँवले और इमलियाँ कहाँ हैं ?”

मास्टर जी ये चीजे सुबह लाना भूल गए थे । मास्टरनी जी गुस्सा होने लगी ।

पर गुस्से से आँवले और इमलियाँ तो नहीं मिलतीं । मंडी से लानी पड़ती हैं । मास्टर जी पूजा में बैठ चुके थे, मंडी कैसे जाते ? उनकी नज़र उस ओर गई जिधर बच्चे खेल रहे थे, कुछ पूजा की वेदी की ओर देख रहे थे ।

“श्याम बेटा, मेरा एक काम कर दे । ये पैसे लेकर तुलसी विवाह के लिए इमलियाँ और आँवले ला दे ।” मास्टरनी जी ने एक बच्चे का नाम लेकर पुकारा ।

पंडित जी मंत्र पढ़ने खड़े ही होने लगे कि तभी “यह लीजिए चाची जी,” कहते हुए गोट्या ने आँवले और इमलियाँ सागने रख दीं ।

मास्टरनी जी खुश थीं । तुलसी-विवाह विधि-विधान से सम्पन्न हुआ । उन्होंने गोट्या को भी दक्षिणा देनी चाही ।

“मैं नहीं लूँगा दक्षिणा ! जब मैंने कोई मंत्र नहीं पढ़े, न पूजा की, तो भला मैं दक्षिणा क्यों लूँ ?” गोट्या ने जवाब दिया ।

“अच्छा-अच्छा बड़ा आया सत्यप्रिय, मत ले दक्षिणा ।” अगर दक्षिणा नहीं लेनी थी तो क्यों रुका इतनी देर ?” मास्टर जी ने फटकारा । गोट्या ने कुछ कहा नहीं, चुपचात पैसे मास्टरनी जी के सामने रख दिये ।

“पैसे वापस कर रहा है, तो फिर इतने सारे आँवले और इमलियाँ कहाँ से लाया ? कहीं चोरी तो नहीं की ?” मास्टरनी जी ने डरकर पूछा ।

“चोरी क्यों करता ? चोरी करना पाप है, मास्टर जी ने सिखाया है हमें । मैं जब बाहर जा रहा था तो साने जी का लड़का सोनू है न, वह थैला भर कर आँवले और इमलियाँ ले जा रहा था । जमींदार के बगीचे

से तुलसी-विवाह के लिए ले जा रहा था। मैंने उससे कहा, थोड़े से मुझे दे दो। मास्टर जी के यहाँ ले जाने हैं, मंडी से लाने में देर लगेगी। तो वह बोला, मैं नहीं देता अपने आँवले और इमलियाँ मास्टरजी के लिए। मुझे बड़ा गुस्सा आया। मास्टर जी के लिए उसने ऐसी बात कही। मैंने उसे मारा। उसके हाथ से थैली छूट गई। मैंने जल्दी से कुछ आँवले और इमलियाँ जेब में भर ली। वह मेरे पीछे दौड़ा, पर मैं उसके हाथ कैसे आता? खूब तेज़ी से दौड़ा मैं। वह रोते-रोते चला गया। पर चाची, अब कल वह मेरी शिकायत करेगा मास्टर जी से और मुझे मार पिटेगी।” गोदया एक साँस में कह गया।



“तुझे क्यों मारेंगे?” गोदया की ओर से मास्टरनी जी पति की ओर मुड़ी,

“सुनो जी, खबरदार जो किसी के बहकावे में आकर इसे मारा तो।”

दूसरे दिन स्कूल में सोनू ने गोदया की शिकायत की। पर मास्टर जी ने गोदया को कुछ नहीं कहा। “स्कूल में बाहर का झगड़ा मेरे पास मत लाया करो” कहकर उन्होंने सोनू को चुप कर दिया।

“अगर मास्टरनी जी के कहने पर मास्टर जी मुझे नहीं मारते तो उनके कहने पर वह मुझे चौथी में बिठा सकते हैं। पर वह क्यों कहेंगी मेरे लिए? और उनसे यह कहना भी गलत है कि मुझे चौथी में बिठाने को मास्टरजी से कहिए...। नहीं, नहीं मैं बिल्कुल नहीं कहूँगा” यही सोचते-विचारते गोदया घर जा पहुँचा।

घर पहुँचने पर उसने देखा कि मास्टरनी जी आई हुई हैं। वह भाभी जी के पास बैठी थीं। सावन महीने के शनिवार के दिन लड़कों को जिमाने का रिवाज है। मास्टरनी जी गोदया को खाने पर बुलाने आई थीं। पर भाभी जी बाजरा खरीदने में लगी थीं। पास के गाँव का किसान हर साल अपने खेत से उगा बाजरा बेचने घर-घर आता था। बाजरा तोलकर कह रहा था, “आठ किलो बाजरा है।”

“गोदया, बता जरा हिसाब करके कि कितने पैसे बने? एक रुपये पच्चीस पैसे किलो के हिसाब से” उन्होंने पूछा।

“जितने किलो उतने रुपए के हिसाब से आठ रुपए और फिर पच्चीस पैसे के हिसाब से दो रुपए, फिर दोनों को जोड़ने से बने दस रुपये।” गोदया ने मिनट में हिसाब पूरा किया।

“एकदम ठीक बताया बाबा ने,” किसान बोला।

“अरे वाह! कितना जल्दी हिसाब कर दिया गोदया ने। कौन-सी कक्षा में पढ़ता है?” मास्टरनी जी ने पूछा।

“दूसरी में,” गोदया ने बताया।

“दूसरी में और हिसाब ने इतना तेज़! हमारे पड़ोस में रहनेवाला गणू मैट्रिक में पढ़ता है। उस दिन मैंने ज़रा दूधवाले का हिसाब करने को कहा तो घंटा भर कापी पर हिसाब करता रहा और वह भी एकदम ग़लत। पर दूसरी कक्षा के लिए गोदया बड़ा मालूम होता है।” मास्टरनी जी ने कहा।

“हाँ बड़ा तो है। पर इसमें उसका क्या कसूर है। उसे तो चौथी तक की पढ़ाई सब आती है। हिसाब, भूगोल, भाषा—सभी विषय, पर मास्टर जी उसे चौथी में बिठाने के लिए तैयार ही नहीं होते।” मेरी पत्नी ने कहा।

“पर क्यों?” मास्टरनी जी ने पूछा।

“न जाने क्यों?” मेरी पत्नी बोली।

“अच्छा...” मास्टरनी जी ने जैसे कुछ तय कर गर्दन हिलाते हुए कहा।

और फिर शनिवार को जब गोदया मास्टरनी जी के घर सावन के महीना के लड़के का खाना खाने गया तो वहाँ से दौड़ता और चिल्लाता आया, “सुमा दीदी, सुमा दीदी, कल से मैं चौथी कक्षा में बैठूँगा। मास्टर जी ने चौथी की किताबें खरीदने के लिए कहा है।” और इस तरह उसने सारा घर अपने सिर पर उठा लिया।



4. गोदया का साहित्य सम्मेलन

उस दिन इतवार था । सभी काम आराम-आराम से चल रहे थे । स्कूल में छुट्टी थी तो अब क्या खेल खेला जाए, इस बारे में गोदया और सुमा सोच रहे थे । सुमा एकदम बोल पड़ी : “गोदया भैया, आज मैं एक मज़ाक करनेवाली हूँ ‘मेरा दूल्हा... !’”

“तेरा दूल्हा ! कब हुई तेरी शादी ? और नाम क्या है तेरे दूल्हे का । बताना, दूल्हे का नाम बताने में शरमा क्यों रही है ।” गोदया ने सुमा को छेड़ा और हँस पड़ा ।

“हत् । मेरा दूल्हा थोड़े न । मैं अपने गुड्डे की शादी की बात कर रही हूँ ।” गुस्से से सुमा बोली, “मैं

और जाह्नवी गुड्डा-गुड़िया की शादी रचाने वाले हैं । मेरा गुड्डा दूल्हा और जाह्नवी की गुड़िया दुल्हन । जाह्नवी का भाई जनार्दन उसका पंडित होगा । तुम मेरे यहाँ के पंडित बन जाना । बनोगे ना ।”

“हाँ, हाँ जरूर बनूँगा । पर दोनों तरफ़ से खूब पकवान खिलाने होंगे इस पंडित जी को ।” गोदया ने अपनी शर्त बताई ।



और फिर वह भाभी से क्या-क्या लेगी, अपने गुड्डे की गुड़िया के लिए, कौन-से गहने बनवाएंगी, गुड्डे को धोती पहनाएंगी या उसके चूड़ीदार पैजामा और अचकन सिलवाएंगी, इसके बारे में गोदया को पूरी जानकारी देती रही ।

गोदया भी गुड्डा-गुड़िया की शादी के कार्यक्रम में दिलचस्पी लेने लगा । शादी में वह पंडित बनने वाला है, यह भूल कर शहनाई बजाने की बात की और पपीते के डंडे से शहनाई बजाते हुए बारात में वह कैसे नाचेगा, इसकी रिहर्सल भी करने लगा । सुमा बड़ी खुश हुई और वह भी नाचने लगी ।

अगर मेरे मित्र सोनोबा नहीं आते तो न जाने कितनी देर दोनों का नाच चलता ! पर सोनोबा चाचा दोनों बच्चों के चहेते चाचा थे । जितना उन्हें चिढ़ाते थे, उतना ही दोनों के साथ खेलते भी थे और उनके लिए हमेशा कुछ न कुछ मिठाई, चिबड़ा, रेवड़ी लाते थे । सोनोबा चाचा की आवाज़ सुनकर बच्चे उनकी ओर कैसे न लपक पड़ते !

“क्यों री छोकरी, कहाँ है तेरा पिता ?” सोनोबा ने सुमा से पूछा ।

“पहले मिठाई या जो चीज़ लाए हैं वह दीजिए तब बताएंगे ।” सुमा भी आसानी से चाचा को छोड़ने वाली नहीं थी ।

“अरे क्या चीज़ दूँ तुम्हें आज ! पत्थर या कंकड़ ! सुबह-सुबह इन बदमाशों ने मेरी जेब खाली करा दी ।” वह नकली गुस्सा दिखाने लगे ।



“किसने काटी आपकी जेब ?” सुमा ने डरते हुए पूछा ।

“पर सोनू चाचा, आपने उन बदमाशों को पकड़ कर मारा क्यों नहीं ?” गोदू का सवाल ।

इस पर सोनोबा हँसते हुए बोले, “बेटा अभी नहीं समझेगा तू ! इन शरीफ़ बदमाशों को पीटना आसान नहीं । और जानते हुए भी उनकी बदमाशी पर रोने के बजाए हँसना पड़ता है बड़े होने पर ।”

पर सोनोबा की ये बातें वाकई गोदया और सुमा नहीं समझे । पर हमेशा की तरह उन्होंने बार-बार नहीं पूछा । पर मैं जानना चाहता था कि बात क्या है ? और जब मैंने सोनोबा से पूछा तो पता लगा कि सुबह-सुबह कुछ लोग साहित्य सम्मेलन के लिए चंदा वसूल कर गए थे सोनोबा से ।

‘तो इतनी नाराज होने की क्या बात है धार ! अपने शहर में साहित्य सम्मेलन हो रहा है, और ये लोग बेचारे जी-जान से इतनी मेहनत कर रहे हैं उसके लिए, और तू है कि दस रुपये देने से जान निकल रही है तेरी । तेरे जैसे पढ़े-लिखे लोगों को क्या यह शोभा देता है ?’ मैंने सोनोबा से कहा ।

मेरी बात सुनकर सोनोबा तड़ाक से बोला, ‘‘अगर साहित्य सम्मेलन वाकई अच्छा काम होता तो मैं दस क्या पच्चीस रुपये देता, खुश होकर । लेकिन होता क्या है इन साहित्य सम्मेलनों में ? कुछ शौकीन लोग अपना ढोल पीटने के लिए ऐसे सम्मेलन आयोजित करते हैं । लोगों से सम्मेलन के नाम पर चंदा वसूल करते हैं । बाहर के कुछ लोगों को बुलाते हैं । उन्हें एक अच्छी दावत देते हैं । वे भी खुश ! पर हम लोगों को क्या गिलता है ? दो-चार बोर करने वाले भाषण और कवि सम्मेलनों की उटपटांग कविताएँ ।’’

सोनोबा को कुछ कहना बेकार था । उस समय वह बड़े गुस्से में था इसलिए उसे चाय पिलाकर शांत किया ।

गूड में न होने से हगेशा की तरह बच्चों से हँसी-मज़ाक किए बिना ही सोनोबा चला गया ।

पर बच्चों के मन में साहित्य सम्मेलन की बात

जम गई थी । रात को खाना खाते समय सुमा ने पूछा : ‘‘दादा आप जाओगे साहित्य सम्मेलन में ?’’

‘‘हाँ, हाँ, अपने शहर में हो रहा है जाना तो पड़ेगा ।’’ मैंने कहा ।

‘‘और भाभी आप ?’’ गोदया ने मेरी पत्नी से पूछा ।

‘‘हाँ, उसकी मर्जी होगी तो वह भी चलेगी ।’’ मैंने कहा ।

‘‘मर्जी की क्या बात है ! इतना बड़ा सम्मेलन अपने शहर में हो रहा है और मैं घर में बैठूँ । ना जी ना, मैं ज़रूर चलूँगी ।’’ पत्नी बोली ।

‘‘दादा, हम भी चलें ?’’ सुमा ने पूछा ।

‘‘छोटे बच्चों का क्या काम ? बच्चों के लिए कुछ नहीं होता । बेकार में हल्ला-गुल्ला करते हैं ।’’ पत्नी ने सुमा की बात काटी ।

‘‘भाभी, और बच्चों की तरह हम हल्ला-गुल्ला नहीं करेंगे ।’’ सुमा ने आग्रह किया । ‘‘जहाँ कहोगे, जब तक कहोगे चुपचाप बैठे रहेंगे ।’’ गोदया ने पुष्टि की ।

‘‘वहाँ की कोई बात तुम्हारे पस्ते नहीं पड़ेगी गोदया ! वहाँ सब बड़ों का काम होता है ।’’ मैंने समझाने का प्रयास किया ।

‘‘दादा, फिर बच्चों का साहित्य सम्मेलन क्यों नहीं आयोजित करते ? बच्चों का भी साहित्य होता है ?’’ सुमा ने प्रतिप्रश्न किया ।

सुमा के इस प्रश्न का उत्तर मेरे पास नहीं था । बच्चों के लिए हमारे यहाँ इतना कम साहित्य लिखा जाता है कि उनके लिखनेवालों का सम्मेलन, जिसमें बच्चे भी शामिल हों, बड़ा कठिन होगा । पर दूसरे देशों में, और भाषाओं में खासकर अंग्रेज़ी में हज़ारों खूबसूरत किताबें प्रकाशित होती हैं और बच्चों के लिए माता-पिता तथा स्कूल और पुस्तकालय इन्हें खरीदकर बच्चों को पढ़ने के लिए देते हैं । बाल साहित्य सम्मेलन भी आयोजित किए जाते हैं । न जाने हमारे यहाँ बाल साहित्य सम्मेलन कब हो सकेगा ! मेरे मन में इस तरह के विचार आ रहे थे और सुमा गुड़से दुबारा पूछ रही थी, ‘‘बताइये ना दादा, बच्चों का साहित्य सम्मेलन क्यों नहीं होता ?’’

‘‘सुनो सुमा, ये बड़े लोग ऐसे ही होते हैं । सब अच्छी और मज़ेदार चीज़ों का खुद मज़ा लेते हैं, सम्मेलनों में ही नहीं, शादी-विवाहों में भी . . . आवभगत भी बड़ों का होता है । कभी बच्चों का आवभगत होता है ? शादी हुई, दावतें हुई, कोई जुलूस हुआ, सभा-सम्मेलन हुआ, सब जगह केवल बड़ों की आगवानी होती है । पता नहीं कोई कानून

है क्या कि इन जगहों में बच्चों को शामिल न किया जाय !’’

गोदया की ये बातें सुनकर हम हँसने लगे । गोदया को लगा कि हम उसका मखौल कर रहे हैं । किसी तरह खाना खत्म करके मुँह लटकाए वह वहाँ से चला गया । पर बच्चों की आदत के अनुसार वह उन बातों को जल्दी भूल भी गया ।

जब मैं दोपहर दो घंटे तो कर नीचे उतरा तो सुमा और गोदया अपने-अपने खेलों में मस्त थे । गोदया पतंग उड़ा रहा था और सुमा अपने गुड्डे की शायी की तैयारियों में लगी थी ।

सम्मेलन का दिन आया । बच्चों को नाराज किए बगैर किस तरह जाएं, हम सोच रहे थे कि सुमा ने पूछा, ‘‘दादा आप कब जाएंगे सम्मेलन में ?’’

‘‘चार बजे ।’’ मैंने हिचकिचाते हुए कहा । मुझे डर था कि अगर ‘‘हम भी चलेंगे’’, कहकर बच्चे पीछे पड़े तो कैसे समझाऊँगा !

‘‘वापस कब तक आयेंगे आप लोग ?’’ गोदया ने जानना चाहा ।

‘‘साढ़े सात या आठ तक ।’’ मैंने कहा ।

‘‘तब तक हम . . .’’

“अलमारी में तुम्हारे लिए लड्डू और बर्फी रखी है ...”

“भूख लगे तो लेकर खा लेना । घर आते ही मैं जल्दी से खाना बनाऊँगी ।” मेरी पत्नी ने कहा । उनकी भूख का इलाज उसने कर दिया था ।

“तीन-चार घंटों में अपना साहित्य सम्मेलन पूरा हो जाएगा । है ना गोदया !” मैं जान गया कि बच्चों को परवाह खाने की नहीं थी, उनकी कुछ और ही योजना बन चुकी थी ।

“तुम भी साहित्य सम्मेलन कर रहे हो ?” मेरी पत्नी ने पूछा ।

“पर साहित्य सम्मेलन में करोगे क्या ?” मैंने जानना चाहा ।

“हम नहीं बताते । जब आप हमें अपने साहित्य सम्मेलन में नहीं ले जाते तो हम क्यों अपने सम्मेलन के बारे में आपको बताएँ ? सुमा ने तुनककर कहा ।

हमने उन्हें ज्यादा छेड़ा नहीं । हमें पता था कि घर आते ही हमें अपने आप सब बताएँगे गोदया और सुमा ।

दादा और भाभी जी के जाते ही गोदया-सुमा अपने साहित्य सम्मेलन की तैयारियों में जुट गए ।

“अब सम्मेलन यानी सारे खेल ठीक से खेलेंगे तो अपना सम्मेलन हो जाएगा और फिर दादा-भाभी को शान से बताएँगे कि लो हमारा सम्मेलन भी हो ही गया,” सोचकर गोदया ने कहा, “बताओ भाई, पहले कौन-सा खेल खेलेंगे ?”

“गुल्ली-डंडा ?” एक ने कहा

“नहीं क्रिकेट खेलते हैं !” दूसरे ने सुझाव दिया ।

“सुन गोदया, पहले हम लुकन-छुपाई खेलते हैं ?”

“क्यों तुम लड़कियाँ अपने खेल-खेलो, किकली या फिर नाचो । हम नहीं खिलाते तुम्हें अपने साथ ।”

“देखो गोदया, श्याम हमें नहीं खिलाना चाहता । आज रोज़ की तरह अलग-अलग थोड़े ही खेलना चाहिए ! आज सम्मेलन है, समझे श्याम जनाब, साहित्य सम्मेलन पुरुष और औरतें सब इकट्ठा मनाते हैं । हम भी इकट्ठा ही खेलेंगे !” सुमा ने अपनी राय स्पष्ट कर दी ।

“हाँ, सुमा ठीक कह रही है । सब मिलकर ही खेलेंगे साहित्य सम्मेलन । चलो लुकन-छुपाई खेलते हैं । चलो, छुप जाओ । पहले ‘डेन’ में ही बनूँगा । हाँ, मेरी आँखें कौन बंद रखेगा ?” सबने पुंड़ू को यह काम सौंपा ।

मसलन, सब साधनों को इकट्ठा करना, उन्होंने सोचा । गोदया को याद था कि सोनोबा चाचा ने कहा था कि यह साहित्य सम्मेलन केवल खेल होता है । गोदया ने अपने खेलों का सामान इकट्ठा कर दिया । लड्डू, गुल्ली-डंडा, क्रिकेट का बल्ला और गेंद । सुमा ने भी अपने गिट्टे, गुड़िया, और उसकी रसोई के छोटे-छोटे बर्तन जमा किए । साथ में भाभी के बताए लड्डू और बर्फी भी । डिब्बे में रखा चिवड़ा बस यूँ ही मिल गया ।

“सारी तैयारी हुई, पर अभी तक बच्चे क्यों नहीं आए ? तुमने सबको बताया था ना ?” सुमा ने पूछा ।

“हाँ, हाँ, सबको बुलाया था । दीनू और वीनू ने कहा था कि वे तीन बजे ही आ जाएँगे मदद करने ।” गोदया ने जवाब दिया, “जाह्नवी और गंगा ने भी कहा था जल्दी आने के लिए । मैं जाकर बुला लाऊँ ?” सुमा ने जानना चाहा ।

“जाना है तो जा, क्योंकि बिना लोगों के सम्मेलन कैसे होगा ? बड़ों के सम्मेलनों में अपने ही नहीं, दूसरे शहरों से भी लोगों को बुलाया जाता है”, गोदया ने कहा ।

पर तभी दीनू और वीनू आए । और एक-एक करके सारे बच्चे पहुँच गए ।

साहित्य सम्मेलन की तैयारी देखकर सभी खुश हुए ।

पुंड़ू भी यह चाहता था । उसने गुंड़या की आँखें अपने हाथों से मीचीं और गिनता शुरू किया । गोदया छुपे हुए खिलाड़ियों को ढूँढ़ने निकला । एक-एक करके सभी से थप्पा मारा, पर शिनु को गोदया ने पकड़ा, और अब शिनु डेन बना ।

पुंड़ू ने शिनु की आँखें मीचीं । सौ गिनते ही शिनु उठा, पर खिलाड़ियों को ढूँढ़ने जाने के बजाय पुंड़ू को देखकर बोला—

“पुंड़ू, सुमा के खिलौने के पास जाकर क्या चीज़ खाई थी तूने ?”

“मैं दरवाजे के पीछे छिपा था, मैंने तब देखा था । बता क्या खाया था ?”

शु . . . स . . . स . . . शोर मत मचा । आ, हम दोनों खाते हैं !” यह कहकर दोनों सुमा के खिलौनों के पास गए और मुट्टियों में चिवड़ा लेकर खाने लगे ।

जब काफी देर तक कोई ढूँढ़ने नहीं आया तो बच्चे बाहर निकल आए । उन्होंने पुंड़ू और शिनु की चोरी पकड़ी ।

“यह क्या कर रहे हो” सुमा जोर से चिल्लाई । चोरी पकड़े जाने पर डर के मारे शिनु और पुंड़ू चिल्लाए तो मुँह में से ठुँसा हुआ चिवड़ा बाहर आने लगा ।

“सब चिवड़ा खत्म कर दिया तुमने ! देखो न गोदया दादा !” सुमा रोने को हो आई ।

गोट्या ने पुंझ को मुक्का मारा । पुंझ ने भी घूँसे से जवाब दिया । घमासान लड़ाई हुई । अंत में गोट्या ने पुंझ को ज़मीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर बैठ गया । पुंझ की मदद के लिए शिनु दौड़ा तो गोट्या के पक्ष में दिनु आया । उसने शिनु को भी खींचा । शिनु ने दिनु का हाथ काट खाया ।

दिनु पीड़ा से चिल्लाया । फिर क्या था ! देखते-देखते दो हिस्सों में बच्चे बँट गए और खूब मार-पीट हुई । जब दिनु ने गुस्से से पास रखे डंडे से शिनु के सिर पर मारा तो शिनु के खून निकल आया और वह बेहोश हो गया ।

डर के मारे सभी रोने लगे । रोना-धोना सुन, पड़ोसी दौड़ आए । उन्होंने बीच-बचाव करके बच्चों को अपने-अपने घर भेज दिया । दिनु की मरहम-पट्टी के लिए डाक्टर बुलाए गए ।

“भाभी को पता लगा तो हमारी खैर नहीं ।” सुमा ने कहा । गोट्या भी डर गया ।

जब भाभी और दादा घर आए तो देखा कि दोनों बच्चे किताबें पढ़ रहे हैं । छुट्टी के दिन भी स्कूल की किताबें पढ़ते देख उन्हें अचरज हुआ । सम्मेलन के बारे में उन्होंने दादा-भाभी से कुछ नहीं पूछा ।

आखिर भाभी ने पूछा “आज पढ़ाई में बहुत ज्यादा मन लगा रहे हो । क्या बात है ?”



5. गोट्या की भैयादूज

“भाभी जानती हो पमी, के भाई ने भैयादूज पर उसे नया फाउन्टेन पेन दिया था पिछले साल और इस साल वह उसे घड़ी देनेवाला है ।”

“अच्छा,” मेरी पत्नी ने जवाब दिया ।

“और जानती हो, कम्मो का भाई उसे चित्रों की किताब देगा इस साल भैयादूज पर ?” सुमा ने और एक खबर दी ।

“उसमें नई बात क्या है सुमा ! हर भाई अपनी बहन को भैयादूज पर कुछ-न-कुछ देता ही है ।” मेरी पत्नी ने कहा ।

सुमा ने गोट्या की तरफ देखा और गोट्या ने सुमा की तरफ, फिर बिना कुछ जवाब दिए फिर से वे किताबें पढ़ने लगे ।

“अरे यह क्या है गोट्या,” उसके शर्ट पर लगे खून के धब्बे देखकर मैंने पूछा— “यह खून कैसे लगा तुम्हारी शर्ट पर ?”

“दिनु के सिर में चोट आई थी । खून बहने लगा । और कोई कपड़ा था नहीं पास में, तो मैंने अपने शर्ट से ही पोछा ।”

“पर दिनु के चोट आई कैसे ?”

“हम साहित्य सम्मेलन का खेल, खेल रहे थे ...” गोट्या के आँसू निकलने लगे, रोते-रोते उसने सारा किताब सुनाया ।

हमने सोचा, बच्चों को क्यों दोष दें ? बड़ों के सम्मेलन में भी तो इसी तरह के झगड़े होते हैं । हाथापाई न सही पर जिस तरह शान को दो गुटों के लोग आपस में बहस कर एक-दूसरे को भला-बुरा कह रहे थे वह बच्चों के हाथापाई से भी बदतर था । बच्चे कम-से-कम जल्दी झगड़ा भूलकर कल फिर इकट्ठा खेलेंगे, पर बड़े अपना झगड़ा हर साल बढ़ाते ही रहेंगे । बड़ों से तो बच्चे ही अच्छे ।

पर इस जवाब से सुमा का मतलब थोड़े ही हल होनेवाला था । उसने फिर पूछा : “अगर सारे भाई अपनी बहनों को भैयादूज के टीके पर कुछ-न-कुछ देते हैं तो गोट्या क्यों नहीं देता मुझे कुछ ! पिछले साल आपने जो रुपये उसे मुझे देने के लिए दिए वही उसने टीका करने पर मेरे थाल में डाले । और फिर वह आपने मुझसे वापस ले लिए । मुझे तो कुछ नहीं मिला । इस साल ऐसे नहीं होगा ! गोट्या, इस भैयादूज पर तुम मुझे ऐसी कुछ चीज़ देना जिसे भाभी मुझसे वापस न ले सके । दोगे न गोट्या ।”

सुमा माँगे और गोट्या न दें, यह कैसे हो सकता था । उसने झट से हामी भर दी, “हाँ-हाँ, इस साल मैं ऐसी अच्छी चीज़ दूँगा जिसे भाभी न ले सके ।”

गोट्या प्रतिज्ञा तो कर बैठा । पर जानता था कि पेन या घड़ी जैसी चीज़ देना उसके लिए नागुमकिन है, पर हाँ, कम्मो के भाई की तरह चित्रों से भरपूर किताब शायद वह दे पाएगा ! बस ठान लेने की देर थी कि गोट्या किताबों की दुकान पर जा पहुँचा ।

स्कूली बच्चा जानकर दुकानदार ने पूछा, “कौन-सी-किताब चाहिए, अंग्रेज़ी की रीडर या प्राइमर ।”

“दोनों में से कोई नहीं ।” गोट्या बोला ।

“तो इतिहास, हिसाब, भूगोल कौन-सी दूँ ?”
दुकानदार ने पूछा ।

“ना, ना मुझे स्कूल की कोई किताब नहीं चाहिए,” गोदया ने कहा ।

“फिर कौन-सी किताब चाहिए ?”

“ड्राइंग की ...”

“ड्राइंग यानी ?” दुकानदार समझा नहीं ।

“ड्राइंग यानी चित्र !” गोदया ने अपनी अंग्रेजी का ज्ञान बघारा ।

जवाब सुनकर दुकानदार हँस पड़ा, फिर उसने ड्राइंग की कापी निकाल कर गोदया को दी, “यह ले । कीमती है ।”

“ओफ हो ! मुझे ड्राइंग कापी नहीं चाहिए । चित्रों की किताब चाहिए ।” गोदया झुंझला कर बोला ।

“चित्रों की ? पर कैसे चित्रों की ?” दुकानदार ने फिर से पूछा ।

“कोई भी चित्र हों, पर चित्र सुंदर और रोचक होने चाहिए,” गोदया ने कहा ।

दुकानदार ने एक बड़ी-सी किताब गोदया को पकड़ा दी ।

गोदया किताब देखने लगा । पहला ही चित्र उसे मोहित कर गया । वह देखता ही रहा । सुंदर रंग-बिरंगे फूल, हरे-भरे पेड़, और पेड़ पर बैठी तोता-मैना की जोड़ी, और इन सबसे अधिक सुबसूरत थी सरोवर के किनारे बैठी एक हँसमुख लड़की की तस्वीर ! गोदया को लगा जैसे वह उसकी सुमा दीदी का ही चित्र है । बिना पत्ते पलटे वह उस चित्र को देखता ही रहा ।

“अरे लड़के, बता तो, लेनी है किताब कि नहीं ?” दुकानदार ने पूछा ।

“हाँ, हाँ, लेनी है, क्या दाम है ?” गोदया ने सवाल किया ।

“साढ़े सात रुपये ।”

“क्या ? साढ़े सात रुपये”, अचरज से गोदया की आँखें फटी की फटी रह गई ।

“तू क्या समझा, साढ़े सात पैसों में मिलेगी ?” दुकानदार ने ताना दिया ।

गोदया के मन में आया “हाँ” कह दे । क्योंकि उस समय उसके पास साढ़े सात पैसे नहीं बल्कि दस पैसे थे । पास की चाची ने दक्षिणा में दिए थे । और उसमें अगर सुमा दीदी की पसंद की चित्रों की किताब मिले तो बात बन जाए !



पर उसका चेहरा देखकर दुकानदार ताड़ गया था कि लड़का किताब नहीं खरीदेगा । ऐसे फोकट के ग्राहक पर वह अपना समय बरबाद नहीं करता । उसने गोदया के हाथ से किताब छीन ली और बोला, “बिकार में आजकल के शैतान लड़के आकर तंग करते हैं ।”

गोदया मुँह लटकाये दुकान से बाहर आ गया । दुकानदार की बातें उसे बड़ी बुरी लग रही थीं । पर उससे अधिक मन मसोसा सुमा दीदी के लिए चित्रों की पुस्तक न खरीद पाने पर । और अपनी प्रतिज्ञा न पूरी हो सकने पर । निराश होकर, वह भटकता जा रहा था । उसे पता ही नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है ।

धूमते-धूमते वह गाँव के जमींदार साने जी के आम के बगीचे में पहुँचा । आम के दिन तो थे नहीं इसीलिए बाग में कोई चौकीदार नहीं था । गोदया बाग में घुस गया । एक पेड़ के नीचे बैठ, जेब से पैसे निकाले और दस पैसों की तरफ काफ़ी देर तक देखता रहा । और फिर आह भर कर ऊपर देखते हुए उन्हें दुबारा जेब में डालने लगा, तभी उसकी नज़र ऊपर की टहनी पर लगे मधुमक्खी के छत्ते पर गई । छत्ता काफ़ी बड़ा था । “खूब शहद होगा इसमें” गोदया ने सोचा । उसी समय उसे एक बात सूझी । दो दिन पहले भाभी के लिए वह दुकान से छोटी-सी कटोरी भर शहद लाया था । इतनी-सी कटोरी भर शहद के दुकानदार ने पचास पैसे

लिए थे। इस छत्ते में तो सौ से भी ज्यादा कटोरियाँ शहद होगा। उससे पचास रुपये तक मिल सकते हैं। और फिर उन पचास रुपयों में वह एक नहीं, चार-पाँच किताबें खरीद सकता है सुमा दीदी के लिए। बस ठीक है। उसने तय किया, छत्ता तोड़ कर दुकानदार को शहद बेच देगा।

गोट्या जानता था कि मधुमक्खियाँ काफ़ी तेज़ काटती हैं और उसके काटने से पीड़ा होती है और उसका काटा हिस्सा बुरी तरह सूज जाता है। मधुमक्खियों को भगाना पड़ेगा, यह सोचकर गोट्या ने कुछ कंकड़ उठाए। और काफ़ी दूर जाकर छत्ते पर एक-एक कंकड़ मारने लगा। दूर जाकर इसलिए ताकि मधुमक्खियाँ उसे काट न लें!

पत्थर मारते-मारते अचानक गोट्या का निशान चूक गया और पत्थर जा टकराया मंदिर के गुम्बद से, और टन की आवाज़ हुई।

“कौन पत्थर गार रहा है?” एक औरत की आवाज़ आई। महिला थी साने जमींदार की पत्नी। मंदिर की प्रदक्षिणा कर रही थी। गोट्या ने पहचान लिया। वह समझ गया, अब वह पकड़कर ले जाएगी। “भागना ही ठीक है,” सोचकर वह दौड़ने ही वाला था कि जमींदार की पत्नी ने पूछा, “क्या चाहिए बेटा तुझे?” उसके स्वर में गुस्सा नहीं, ममता थी।

“फिर किसलिए?” उन्होंने पूछा।

जमींदारनी के प्यार भरे बर्ताव से गोट्या प्रभावित हुआ। उसने सुमा दीदी को भैयादूज के टीके पर किताब देने की अपनी प्रतिज्ञा और प्रयत्नों की सारी बातें बता दीं।

सगे भाई-बहिन न होते हुए भी गोट्या और सुमा में आपसी प्यार और स्नेह की बातें सुनकर जमींदारनी जी को बड़ा अच्छा लगा और उस स्नेहमयी के मन में गोट्या के लिए ममता जाग उठी।

“गोट्या, कल स्कूल की छुट्टी होने पर मेरे घर आना,” उन्होंने कहा।

“किसलिए?”

“मैं दूँगी तुम्हें सुमा दीदी को देने के लिए वह चित्रों की किताब।”

“उसके लिए मुझे क्या काम करना होगा?” गोट्या ने पूछा।

“अरे पगले, काम किसलिए करना होगा!” जमींदारनी जी ने पूछा।

“पर मैं तो अपनी मेहनत की कमाई से सुमा दीदी को एक उपहार देना चाहता हूँ। मेरे दादा और

गोट्या का डर कुछ कम हुआ और अपनी गलती के एहसास से सहम वह वहीं खड़ा रहा, कुछ जवाब नहीं दे पाया।

जमींदारनी जी उसके पास आई और बोली, “अच्छे बच्चे लोगों को पत्थर नहीं मारते।”

“पर मैं लोगों को थोड़ी न मार रहा था!” गोट्या बोला।

“फिर किसे मार रहे थे?” उन्होंने पूछा।

गोट्या ने उँगली से छत्ता दिखा दिया।

“बाप रे! इन मधुमक्खियों को छेड़ना चाहता था। अगर ये तुझे काट लेतीं तो तेरा क्या हाल होता बेटा!”

“काटे नहीं, इसीलिए तो दूर से पत्थर मार रहा था।”

“पगले... लेकिन मक्खियाँ तो उड़कर तेरे पास आ सकती थीं! तेरी तकदीर अच्छी है कि तेरा निशाना चूका बरना अभी तक छेड़ी हुई मधुमक्खियों ने तुझे घेर लिया होता! तुझे शहद इतना अच्छा लगता है, मैं खिलाऊँगी तुझे शहद।” वह बोली।

“मुझे खाने के लिए नहीं चाहिये था।” गोट्या ने कहा।

भाभी जी कहते हैं कि कि किसी से कोई चीज़ मुफ्त नहीं लेनी चाहिये।” गोट्या बोला।

“अच्छा।” जमींदारनी जी मन ही मन गोट्या के दादा और भाभी जी की इस बात के लिए तारीफ़ करने लगीं कि बच्चों पर कितने अच्छे संस्कार डाले हैं उन्होंने। फिर कहने लगीं, “अब घर चलो मेरे साथ, नहीं तो फिर मधुमक्खियों के छत्ते को पत्थर मारने लगोगे।”

गोट्या जमींदारनी जी के साथ बाग़ से बाहर आया और उन्हीं के ताँगे में बैठकर घर आया।

जिस काम के लिये निकला था उसके न होने से गोट्या मन ही मन दुखी हो रहा था। उसे लगा, दुबारा घर से निकले और किताब के बजाए कोई और चीज़ ढूँढ़े। पर तभी घर के अंदर से अपरिचित आवाज़ सुनाई दी। गोट्या घर में घुसा।

“लो यह आ गए आपके शहजादे! अब लीजिए इनकी खबर अच्छी तरह से। नाम बड़े और लक्षण खोटे हैं इनके।” पड़ोस की काकी के तोपखाने से गोट्या भौंचक्का रह गया। काकी इतना क्यों बिगड़ रही है, वह समझ नहीं पा रहा था। पिछले हफ्ते ही तो उन्होंने गोट्या से अपने बड़े भाई को चिट्ठी लिखवाई थी। गोट्या ने भी कक्षा में सीखी पत्र-लेखन की सभी बातें ध्यान में रखकर चिट्ठी सुंदर और साफ़ लिखाई में लिखी थी।

चाची ने उसे सराहा भी था, न जाने अब क्या हुआ . . . गोदया दुविधा में पड़ा ।



हर साल भैयादूज पर आने के लिए पत्र काकी के पति केशव काका ही लिखते थे । पर इस साल किसी काम से वे कोल्हापुर गए थे । काकी पढ़ना-लिखना जानती नहीं थी इसलिए उन्होंने भाई को पत्र गोदया से लिखवाया था । गोदया ने लिखा था, और उस पत्र से सारा मामला चौपट हो गया था । गोदया ने लिखा था,

“पूज्य चिरंजीव बड़े भैया,

हर साल भैयादूज पर आने के लिए ‘यह’ पत्र लिखते हैं लेकिन इस साल मुझे लिखना पड़ रहा है, क्योंकि अचानक ये कोल्हापुर में गुजर गए । पिछले साल

भाभी जी के स्टमक स्वेलिंग के कारण आप नहीं आए । पर इस साल जरूर आइये ।

आपकी लाइकिंग,

गंगा-भागीरथी आऊ दीदी थी

ऐसा पत्र पढ़कर काकी के भैया का चबरा जाना स्वाभाविक था । भैयादूज तक वह कैसे सबर करते ! वह क्रौरन गाड़ी पकड़कर यहाँ आए । और गोदया ने पत्र में क्या लिखा था, इस बारे में जब काकी को पता लगा तब गुस्से से आग-बबूला हो, वह हमारे यहाँ धमकीं ।

मैं खबर लेता हूँ उसकी । उसकी खूब मरम्मत करता हूँ । आप घर जाइये । भगवान सलामत रखे केशव काका को, कहकर किसी तरह मैंने काकी को खाना किया । फिर गोदया से पूछा कि “पत्र ऐसा क्यों लिखा ? बड़े भाई को पूज्य, या पूजनीय लिखते हैं, चिरंजीव क्यों लिखा ?”

पर मास्टर जी ने कहा था कि जब हम चाहते हैं कि कोई अनेक वर्ष जिए तो उसे ‘चिरंजीव भव’ का आशीर्वाद देते हैं । और काकी अपने भैया को जब इतना प्यार करती है तो वह अवश्य चाहती है कि वे अनेक साल ज़िंदा रहे, इसलिए मैंने चिरंजीव लिखा ।”

फिर उसने बताया कि गुजर गए शब्द का अर्थ मास्टरजी ने कहा था चले जाना । काका कोल्हापुर

अचानक चले गए थे इसलिए मैंने लिखा, गुजर गए । और मास्टर जी ने कहा था, जिसके पति यहाँ नहीं होते उन्हें गंगा-भागीरथी लिखते हैं, क्योंकि केशव काका यहाँ नहीं हैं, मैंने काकी के लिए गंगा-भागीरथी लिखा । अगर मास्टर जी ने बताया होता कि गुजर जाने का मतलब मर जाना है तो मैं यह सब नहीं लिखता ।”

“और यह ‘स्टमक स्वेलिंग’ और ‘लाइकिंग’ का क्या मतलब ?” मेरी पत्नी ने पूछा ।

“काकी ने कहा था कि पिछले साल उनकी भाभी के बच्चा होनेवाला था, इसलिए उनके भैया नहीं आ पाए थे । जब बच्चा होनेवाला होता है तो पेट बड़ा हो जाता है, इसलिए मैंने अंग्रेजी शब्द स्वेलिंग का इस्तेमाल किया । और ‘लाइकिंग’ का मतलब होता है प्यारी या अच्छी लगनेवाली—इसलिए लिखा आपकी ‘लाइकिंग’ ?

अब गोदया की इस बात पर हमें गुस्सा कैसे आता ? बड़ी मुश्किल से हम अपनी हँसी रोक पा रहे थे । मैंने उसे ऐसे लिखने से जो शलतियाँ और शलतफ्रहमियाँ हुईं और काकी के भैया को जो तकलीफ़ हुईं वे समझाई, यह सुनकर गोदया शर्मिन्दा हुआ ।

पर काकी को कैसे समझाएं और उनका गुस्सा दूर करें, मैं समझ नहीं पा रहा था । अगर केशव काका यहाँ

होते तो अच्छा होता ! केशव काका मजाकिया हैं । वे काकी की तरह गुस्से वाले नहीं । वह अनजाने में हुई इस बात पर जरूर हँसते और उसका मजा लेते । मुझे पूरा विश्वास था और हुआ ऐसे ही । दीवाली के पहले दिन केशव काका के आते ही मैं वहाँ पहुँचा और गोदया के लिखे पत्र से जो गड़बड़ हुई वह बताई । सुनकर ठाका मारकर केशव काका हँसे । “लड़का होशियार मालूम पड़ता है,” केशव काका ने कहा ।

दीवाली के दिन नहा-धोकर हम तैयार हुए । सुमा रंगोली बनाने में लगी थी । पर हमेशा कि तरह उसे चिढ़ाने या मदद करने की बजाय गोदया गुमसुम बैठा था । पूछने पर भी उसने कुछ नहीं बताया । मेरी पत्नी जानती थी उसकी चुप्पी का कारण । सुमा दीदी को टीके पर क्या दे, यह प्रश्न उसे सता रहा था । उसने गोदया को काकी समझाया । अरे इस साल न सही, अगले साल देना और फिर जब बड़ा होकर पैसे कमाएगा तो खूब बढ़िया तोहफे देना हर साल ।

पर गोदया का मूड बना ही नहीं । उसकी पसंद के पकवान होने पर भी उसने दीवाली का खास नाश्ता बड़े बेमन से किया ।

“कहाँ है हमारा दोस्त !” केशव काका की आवाज सुनकर गोदया रोने लगा । उसे लगा कि केशव काका उसे सज़ा देने के लिए बुला रहे हैं । पर केशव



काका ने उसे पास लाकर शांत किया और कहा, “गोट्या तेरी होशियारी से मैं बहुत खुश हूँ। मैं समझता था कि आजकल के बच्चों के दिमाग हैं ही नहीं। पर तूने साबित किया कि मेरा ख्याल गलत था। तुम बच्चों का दिमाग तेज़ भी है और उसे इस्तेमाल करने का साहस भी तुम बच्चों में है। गलतियाँ नहीं करोगे तो सीखोगे कैसे? दिमाग इस्तेमाल न करने से अच्छा है गलतियाँ करके सीखना। इसलिए तेरे लिए यह दीवाली का उपहार” और केशव काका ने गोट्या के हाथ में एक बक्सा थमाया। उसमें था छोटा-सा कैमरा।

“भाभी मैं यही उपहार सुमा दीदी को दूँगा भैयादूज पर।” गोट्या खुशी से उछलकर बोला।



6. गोट्या की नाटक मंडली

आने वाले शनिवार के बाद गर्मियों की छुट्टियाँ पड़नेवाली थीं। गोट्या और सुमा खुश थे। पर उससे पहले उनके स्कूलों में सालाना जलसा होनेवाला था। गोट्या अपने स्कूल के जलसे में नाटक में पार्ट करनेवाला था। सुमा की शिक्षिका ने भी उससे वादा किया था कि नाटक में उसे लेंगी। दोनों जने अपने नाटकों में आने के लिए एक दूसरे को बुलावा दे रहे थे। सारे दिन भर नाटक के सिवा और कुछ सूझता नहीं था। नाटकी अंदाज में ही वह दोनों बातें करते। घर में अगर चिड़िया घुस आती तो, “हे दुष्टो, तुम्हारी मौत सामने खड़ी है। आज मेरे चंगुल से तुम्हें खुदा भी नहीं बचा सकता”, अपने पार्ट के डायलाग बोलते हुए गोट्या चिड़ियों को भगाता।

“ना, मुझे नहीं चाहिये यह कैमरा। केशव काका ने तुझे दिया है। अगर उन्हें पता लगा कि उनका दिया हुआ तोहफ़ा तूने मुझे दिया है, तो सोच उनको कितना बुरा लगेगा?” सुमा ने कहा।

सुमा की इस बात का जवाब गोट्या के पास नहीं था। वह फिर सोच में डूब गया। और खामोश बैठ रहा।

पर उसकी खामोशी थोड़ी देर में ही टूट गई।

हगारे घर के सामने साने जमींदार का ताँगा रुका। उनके दीवान जी आकर बोले, हगारी मालकिन ने इन दोनों बच्चों को बुला भेजा है।”

“किसलिए?” मैंने पूछा।

“यह तो पता नहीं। पर इस लड़के से उन्हें बड़ा स्नेह हो गया है, जब से उनका इससे परिचय हुआ।”

दीवान जी के साथ गोट्या और सुमा जमींदार की हवेली पर गए।

जमींदारनी जी के कोई बच्चा नहीं था। इन दोनों बच्चों का भैयादूज का त्योहार मनाकर उन्होंने अपनी ममता का परिचय दिया था। दोनों बच्चों के साथ दीवाली का त्योहार भी उन्होंने मनाया था।

वह अपनी भाभी से भी डायलाग बोलता था, “माँ साहब आपका हुक्म सर आँखों पर।” सुमा भी नाटक के ही सपने देख रही थी। शिक्षिका निश्चय ही उसे राजकुमारी का पार्ट देगी, यह सोचकर वह अपनी माँ के पीछे पड़ी थी। आपकी वह रेशमी बूटियों वाली साड़ी पहनूँगी मैं। और हाँ, गोटियों की गाला भी देनी होगी। और नाटक वाले दिन शाम को पाँच बजे ही खाना देना होगा हमें।

“तुम्हारा नाटक न हुआ, मेरी आफ़त आ गई”, मेरी पत्नी ने झुँझलाकर कहा।

पर दूसरे दिन सुना जब घर रोते हुए लौटी तब चितित होकर मेरी पत्नी ने पास बिठाकर पूछा,

“क्या हुआ सुमा बेटी?” इस पर सुमा और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

“किताब खो गयी है क्या?”

सुमा ने गरदन हिलाई, फिर पूछा “गिर गयी थी क्या?”।

“चोट लगी है क्या?”

“नहीं” सुमा ने हिचकियाँ भरते हुए कहा।

“फिर हुआ क्या है? इतना रो क्यों रही हो,” मेरी पत्नी ने थोड़े गुस्से में भरकर कहा।



“मैडम मुझे ड्रामे में पार्ट नहीं दे रही ।” और फिर सुबक-सुबक कर सुमा रोने लगी ।

“जाने दे । नहीं पार्ट देती तो ना सही । वैसे देखा जाय तो ड्रामे में पार्ट लेना ही नहीं चाहिये, क्योंकि फिर तो हम ड्रामा देख नहीं पाते । वह ड्रामा देखने से तो तुम्हें रोक नहीं सकती ।” सुमा को समझाने के लिए और चुप कराने के लिए गाँ ने कहा ।

पर सुमा को अपनी मैडम पर बहुत गुस्सा आ रहा था । इसलिए बोली, “मैं क्यों जाऊँ ड्रामा देखने ? कोई ज़रूरत नहीं मुझे ड्रामा देखने की ।”

गोट्या को जब पता लगा तो उसे भी सुमा की मैडम पर गुस्सा आया ।

मैडम इतनी बड़ी है और फिर भी झूठ बोलती है । और हमें ये अध्यापक कहते हैं, झूठ मत बोलो । अपना वचन पालना चाहिये । फिर मैडम ने अपना वायदा क्यों नहीं पूरा किया ?

“कोई बात नहीं सुमा, तेरी मैडम तुझे नाटक में पार्ट नहीं देती तो मैं भी अपने स्कूल के नाटक में पार्ट नहीं करूँगा । हम अपने घर में ही नाटक खेलेंगे ।”

फिर क्या था ? सुमा अपना रोना भूल गई और नाटक की बातें शुरू हो गई । गोट्या को उसके नाटक ‘बाल शिवाजी’ का पार्ट याद था ही ! सुमा ने झाँसी की रानी नाटक देखा था और रानी लक्ष्मीबाई का पार्ट उसे अच्छा लगा था । और उसने तय किया कि वह झाँसी की रानी ही बनेगी ।

उनके दोस्त विठू को नाटक खेलने का शौक था लेकिन उसे भी मास्टर जी ने नाटक में पार्ट नहीं दिया था । वह, गोट्या-सुमा के नाटक में जोकर का पार्ट करने के लिए खुद तैयार हो गया । उसने किसी फ़िल्म में जोकर का काम देखा था और उसे विश्वास था कि वह अच्छा जोकर बनेगा । इसी तरह गोविंद, विनू, मधु, कमला और गौरी भी नाटक में पार्ट लेने आ गए ।

सबने मिलकर तय किया कि गोट्या शिवाजी बनेगा, सुमा झाँसी की रानी, विठू पेंछा या जोकर,

गोविंदा सर ह्यू रोज, मधु गोपीचंद—नाटक का कानीफ, कमला फ़िल्म की हिरोइन नीरा और गौरी शिवाजी की माँ जीजाबाई ।

फिर तय हुए संवाद या डायलाग । रिहर्सल होने लगी । नाटक का किसी को पहले पता न लगे, इसलिए रिहर्सल विनू के घर के पीछे उनका जो तबेला था उसमें होती । और नाटक के लिए जगह चुनी गई हमारा खाली पड़ा हाल ।

उस दिन छुट्टी थी । हमें हमारे रिश्तेदार के यहाँ दोपहर के खाने में बुलाया गया था । खाने के बाद सुमा गोट्या और मैं वापस आए । मेरी पत्नी मदद के लिए रुकी थी । पर चार बजे वापस आने को कहा था । जब घर आकर मैं अपने दोस्तों के साथ ताश यानी ब्रिज़ खेलने निकला तो बच्चे बोले “दादा चार बजे तक ज़रूर वापस आना, नहीं तो कुट्टी हो जाएगी ।”

वैसे भी बच्चों का दिल तोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता और अब तो कुट्टी हो जाने का डर था । चार बजने को आए तब मैं काम का बहाना बनाकर ताश की महफिल से उठकर घर आया । हमारे आँगन में बच्चों की भीड़ हो रही थी । गोट्या का दोस्त लक्ष्मण सीढ़ी के पास मुस्तैद था और जिस बच्चे के पास गुलाबी रंग का टिकट था उसे ही ऊपर जाने दे रहा था । मेरी पत्नी बरामदे पर खड़ी थी । मुझे देखकर हँसकर बोली,

“आपको टिकट मिला है या नहीं, वरना अंदर नहीं जा पाओगे ।” फिर मुश्किल से हँसी रोकते हुए उसने बच्चों के नाटक की बातें बताई ।

हम जल्दी-जल्दी हॉल में पहुँचे । रस्सी पर चादरें डालकर पर्दा बनाया था, जिसके पीछे था स्टेज । बच्चे सटकर बैठे थे । हम दोनों के लिए दो कुरसियाँ लगाई गई थीं । दूसरी घंटी बजी । मन में आया, पर्दे के पीछे जाकर देखूँ कि क्या हो रहा है ! शायद बच्चे शरमा जाएंगे, यह सोचकर बैठा रहा । मेरी पत्नी नाटक का इतिहास बता रही थी । हम हँस रहे थे कि तीसरी घंटी हुई और पर्दा सरका दिया गया ।

धोती और उत्तरीय लटकाए तीन लड़के खड़े थे । उन्हें देखते ही बच्चे बोल उठे, बीच वाला है मधु और एक तरफ़ है गोविंद और दूसरी ओर विनू । लेकिन विनू ने तो पगड़ी उल्टी पहनी है । और देखो गोविंद ने उत्तरीय के बदले रुमाल लगाया है । बच्चे बोल रहे थे कि गाना शुरू हुआ ।

मधु मुख्य सूत्रधार था । उसने गाना शुरू किया—

“प्रभु मेरी विपदा दूर करो ।
तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो
तुम ही सब हित करता,
उधो मनन की गति न्यारी,
प्रभु मेरी विपदा दूर करो ।”

भजनों की खिचड़ी समाप्त करते हुए मधु ने कहा, “दोस्तो, अब प्रार्थना समाप्त हुई” । गोविंद बोला, “मधु, अभी नहीं समाप्त हुई ।

मधु ने कंधा मटकाकर और जीभ चबाकर कहा, “अच्छा-अच्छा गाओ—”

मधु और अन्य गाने लगे—

कन्हैया बजाओ बजाओ मुरली,
मुरली बजाओ, दैत्यों को मारो,
सुमा और गोदया के नाटक में
सहाय करो ओ ओ ओ ओ
कन्हैया बजाओ बजाओ मुरली।

मधु बोला, “अब तो हो गई न प्रार्थना ! अब तुम दोनों अंदर जाओ और दोस्त लंबू को भेजो । गोविंद और विनू जाते हैं । और सियाही से बनाई गयी मूँछ, माथे पर तिलक लगाए, मर्दाना धोती और औरतों का ब्लाउज पहनकर जोकर बना विठू मंच पर आता है । उसे देखते ही बच्चे हँसने लगे ।

विठू ने जब कलाबाजी लगाई, एक-दो, तब तो बच्चे हँस-हँस कर पागल होने लगे । गोदया अंदर से चिल्लाया, “चुप हो जाओ वरना बाहर भगा दूँगा ।”

सब शांत हुए ।

मधु—दोस्त लंबू आज यह गंगा-जमना वाली वर्दी क्यों पहनी है ।

विठू—मास्टर जी ने कहा था ।

मधु—मास्टर जी ने चोली या ब्लाउज पहनने को कहा था ?

विठू—अरे मास्टर जी ने ब्लाउज पहनने को नहीं कहा था पर यह कहा था बच्चों को चाहिए कि अपनी माता-पिता की तरह अच्छा बर्ताव करें । मेरी माँ ब्लाउज पहनती है और पिताजी धोती, इसलिए दोनों साथ पहनकर मैंने मास्टरजी का कहा माना है ।

बच्चे हँसते हैं ।

मधु—आज के नाटक के लिए तेरी मदद की ज़रूरत है, इसलिए तुझे बुलाया है ।

विठू—आल राईट फ्रैंड, पर यह तो बता कौन-सा नाटक खेल रहे हो ।

मधु—गोदया अपने साथियों के साथ ड्रामा खेल रहा है । इसमें उसकी मदद कर रही है छोटी बहन सुमा । चले, हम भी जहां हो रहा है ड्रामा । दोनों अंदर जाते हैं । तालियाँ बजाते हैं । पर्दा गिरता है ।

और फिर असली ड्रामा शुरू हुआ । स्टेज के बीच एक कुर्सी पर अपनी माँ की रेशमी बूटियों वाली साड़ी पहने, गले में मोतियों की माला डाले सुमा बैठी थी । उसकी एक तरफ अंग्रेजों के पोशाक में गोविंद सर ह्यूरोज बना खड़ा था । उसके हाथ में दिवाली के पटाखों वाली बंदूक थी । दूसरी तरफ गोदया बाल शिवाजी बनकर खड़ा था ।

अपने अंगरखे के बीच कमर में कसकर चादर तह कर बाँधी थी । दाढ़ी-मूँछे तो थी हीं । और टोपी के लिए चावल या सब्जी धोनेवाली छननी को सुनहरा कागज़ चिपकाकर टोपा बनाया गया था । कमर में तलवार की जगह मेरी छोटी छड़ी खुँसी थी । अपने कैनवास के जूतों



पर रंग-बिरंगे कागज़ सजाकर शिवाजी के जूते बनाए गए थे ।

भाषण शुरू हुआ ।

रानी झाँसी—मैं अंग्रेजों की धौंस नहीं चलने दूँगी । मैं अपनी झाँसी नहीं छोड़ूँगी ।

शिवाजी—माँ साहेब, आपके इन वचनों ने मेरी शूरता, वीरता और पराक्रम को जागृत किया है । जैसे राम ने रावण को मारा और कृष्ण ने कंस को संहारा, मैं भी देश के दुश्मनों को खत्म करके दम लूँगा ।



सर ह्यूरोज—आप झाँसी देती हैं या

शिवाजी (गोदया)—हलकी आवाज़ में गोविंद.... अंग्रेज़ी में बोल अंग्रेज़ी में ।

सर ह्यूरोज—बैड ब्वाइज़ किल फ़्लाइज़ वी किल दाउ किलेस्ट, यू किल, ही किल्स, दे किल ।

रानी झाँसी—सेनापति सर ह्यूरोज मेरे सामने आपकी कुछ नहीं चलेगी । मैं अपनी झाँसी कभी नहीं दूंगी ।

शिवाजी—मेरा सिर खुदा के आगे झुक सकता है । गुरु के आगे नम्र हो सकता है । पर बादशाह के आगे मैं अपना सिर नहीं झुकाऊँगा ।

इतने में भस्म लगाए, दाढ़ी-मुँछें बनाए और कमर में रस्सी के अनेक फेरों से अपने भगवे वस्त्र को बाँधे एक हाथ में हैट को कमंडल बनाकर, दूसरे हाथ में रोटी सेकने का चिमटा लिए कानीफ या फकीर बनकर मधु आया । वह पहचाना भी नहीं जा रहा था ।



कानीफ—“जय अलख निरंजन ! राजा हम फकीरों और संतों के सामने तेरी वीरता का घमंड नहीं चलेगा । एक मंत्र से हम तुझे पल भर में जलाकर राख बना सकते हैं । अलख निरंजन !”

पेंचा, जिसके सारे शरीर पर नीम के पत्ते बँधे हुए थे और बोदी के लिए कागज़ के टुकड़े चिपकाए थे, आया और बोला, “कितना (कृष्णा) ये तेली ग्वालने तंग कल लही है मुझे । औल बोदी मैं पलांदी (परांदी) लगा दी है । (तुतला कर बोलता है)

सर ह्यूरोज—दि किंग आर्डर दि क्वीन,

रानी झाँसी (हलके से)—गोविंदा, अब मेरी बारी है डायलाग बोलने की फिर जोर से । “हमारे किले की दीवारें टूटने लगी हैं । गोरे सिपाही अंदर घुस आए हैं । अब हमें इनसे लड़ते हुए इस किले से निकल जाना ही होगा ।” कहकर सुमा तलवार बनी छुरी को अपने कमर से निकालकर अंदर जाने लगी । तभी अंदर से आवाज़ आई “सुमा तेरा गाना—”

सुमा वापस आकर गाने लगी—

बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी ।

गाना समाप्त कर सुमा अंदर गई । बच्चों ने तालियाँ बजाई ।

शिवाजी—जाओ वीर रानी, तेरे मरने के बाद भी तेरा नाम सारे जगत में अमर रहेगा ।

“मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो कुरबानी....

(दो लाइन गाकर)

शिवाजी—ओ दुष्ट ह्यूरोज, तूने हमारे वतन का जो नुकसान किया, उसके लिए इन शेर जैसे नाखूनों से या तलवार से...

कानीफ—जय अलख निरंजन ! शिवाजी महाराज आप बीजापुर के सरदार अफ़जल खाँ को मारो । मैं अपने मंत्र से ह्यूरोज को भस्म कर देता हूँ । जय अलख निरंजन ! ह्यूरोज बना लड़का ‘आय रन वुईरन’ कहते-कहते भागता है और उसके पीछे कानीफ भी ।

बीजापुर का सरदार अफ़जल खाँ बना लड़का आता है । अपने माथे का तिलक पोछना भूल गया था ।

अफ़जल खाँ—“कहाँ है वह पहाड़ी चूहा । देखता हूँ कैसे बचेगा मेरे चंगुल से ? सामने वाले किले से चालाकी से भाग निकला, पर अब मुझसे नहीं बच सकता । चाहे तेरी मदद के लिए लोकमान्य तिलक

आए, महात्मा गाँधी आए या वीर सावरकर । अब मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा”

पेंचा—शिवाजी लाजे आप गोवालधन पलवत में जाकर छुप जाओ । मैं इस खान को गोवर्धन पर्वत दिखाता हूँ । बोल ऐ दाढ़ीवाले, तुझे बाद में मारूँगा । अभी उस कोने में खड़ा रहकर हमारी लड़कियों का गाना सुनना । (खान की गरदन पकड़कर उसे कोने में खड़ा कर देता है)

फ़िल्मी हिरोइन बनी लड़की आती है और नाचते हुए गाती है—

एक दो तीन, चार पाँच छः सात आठ, नौ दस ग्यारह बारा तेरा ।....

आ जा पीया गिन गिन के प्यार, तेरा करूँ मैं इंतज़ार....

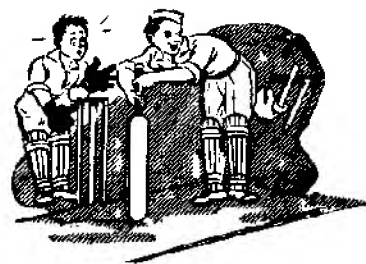
दूसरी तरफ़ से शिवाजी की माँ जीजाबाई आती है और ‘सोजा रे सोजा मेरे राजा दुलारे सोजा’ वाली लोरी गाती है । और तभी पर्दा गिरता है और नाटक समाप्त होता है ।

जमा बच्चों की तालियों से हाल गूँज जाता है । थोड़ी देर के बाद वे चले जाते हैं । हम दोनों इस ऐतिहासिक पौराणिक, फ़िल्मी खिचड़ी नाटक को देखकर

हँस रहे थे। पुराणों से कृष्ण का तुतलानेवाला साथी पेंद्या और गोपीचंद राजा को समझाकर राह पर लानेवाला कानीफ, इतिहास से शिवाजी, जीजाबाई, रानी लक्ष्मी और हमारे नये नेता तिलक, गाँधी, सावरकर, सबको इकट्ठा लाकर नाटक को लिखनेवाले गोदया के बुद्धि की हमें दाद देनी पड़ी।

गोदया ने बाहर आकर पूछा, “दादाजी कैसा लगा नाटक ?”

“फ़र्स्ट क्लास। एकदम सुंदर। और इस खुशी में मैं सबको कुछ इनाम देनेवाला हूँ। हाथ-मुँह धोकर, सारी चीज़ों को सँवारकर नीचे आना अपना इनाम लेने” और वहाँ खड़े दूसरे बच्चे भी लग गए सामान सँवारने।



7. गोदया और क्रिकेट

गोदया, सुमा और उसके साथी गम्पे लगा रहे थे। गोदया कलकत्ता में दो साल रहने के बाद कुछ ही दिन पहले आया था और इसलिए वहीं की बातें हो रही थीं।

“पता है, गोदू भैया ने जापानी जहाज़ देखा, वहाँ हुगली में।” सुमा सुनंदा को बता रही थी।

“क्यों झूठ बोलती है। हुबली तो इधर कर्नाटक में है, वहाँ कहाँ से आया समुद्र ?” सुनंदा बोली।

“हुबली नहीं पगली हुगली ! बड़ी नदी, जो कलकत्ता में है, उसी में दूर-देश से जहाज़ आते हैं।” सुमा ने अपनी बात पर ज़ोर दिया।

“जहाज़ सगुद्र में आते हैं। नदी में कभी जहाज़ आ ही नहीं सकते।” मधु ने अपने शान का परिचय दिया।

“हुगली आम नदियों की तरह नहीं है। वह बहुत बड़ी है और लगता है समुद्र का मुँह हो, क्योंकि फिर समुद्र से जाकर गिलती है।” गोदया भला सुमा की बातों को किसी और को काटने देता ! वह आगे बोला, “और वहाँ जहाज़ आते हैं जो पूरे घर या बँगले की तरह होते हैं। उसमें रसोई का कमरा होता है, खेलने के लिए जगह भी होती है जहाँ टेनिस, बैडमिंटन और क्रिकेट तक खेली जा सकती है।”

खेलों की बातें आते ही मधु ने नेता बनना चाहा। वह बोला, “वाकई क्रिकेट जैसा खेल नहीं है। क्या शान-शौकत है उस खेल की।”

“मैं नहीं मानता। बेकार ही लोगों ने क्रिकेट और क्रिकेट खिलाड़ियों को सिर चढ़ा रखा है।”

बेकार क्यों ? क्रिकेट है ही ऐसा खेल जिसमें ताक़त-फुर्ती और निशानेबाज़ी की ज़रूरत होती है। बल्ला पकड़कर गेंद मारने और चौके, छक्कों के लिए कितनी ताक़त लगती है। फिर ‘कैच’ करने के लिए फुर्ती, और गेंदबाज़ी में सही निशाना !” मधु ने क्रिकेट की महिमा बखानी।

“हमारे हिन्दुस्तानी खेलों में भी इन सब की आवश्यकता है। कबड्डी में दस-दस लोगों से पकड़े जाने पर छुटकर लाइन तक जाने के लिए ताक़त और फुर्ती दोनों की ज़रूरत नहीं पड़ती क्या ? और खो-खो में फुर्ती ताक़त और निशानेबाज़ी के साथ-साथ दिमाग की भी ज़रूरत नहीं पड़ती ?”

हमारे खेलों के लिए रुपये भी नहीं खर्च होते। और तुम्हारे क्रिकेट जैसी विदेशी खेलों के लिए बल्ला-गेंद, नेट, पैड्स और शानदार पोशाक कितने ही रुपये लगते हैं, और यह चीज़ें भी तुम विदेशों से मँगवाते हो। गाँधी जी ने कहा था, हमें देशी चीज़ें इस्तेमाल करनी चाहिए और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।” गोदया जोर-जोर से अपना देश-प्रेम दिखा रहा था।

“अगर देशी खेलों का इतना बखान कर रहे हो तो चलो पहले देशी खेल खेलकर दिखाओ . . . है हिम्मत ? दिखाओ अपने खेलों से मिली हुई ताक़त, फुर्ती और होशियारी ! खेलोगे हमारे साथ क्रिकेट ?”

ऐसी चुनौती !” गोदया कैसे पीछे रहता, “ठीक है, हम खेलेंगे तेरी टीम के साथ क्रिकेट का मैच, पर एक शर्त पर, पहले मेरी टीम के साथ तुम्हें हिन्दुस्तानी खेल खो-खो का मैच खेलना होगा।”

“मंजूर।” मधु शान से बोला। उसने सोचा कि खो-खो में है ही क्या गुश्किल !

अंदर कमरे में बैठा मैं सब सुन रहा था। बच्चों की बातों में मजा भी आ रहा था और दोनों बच्चों के आपस की जलन का भी अंदाजा लगा रहा था। दोनों ही नासमझ थे। जिस खेल को खेला भी नहीं था उसका मैच खेलने चले ... पर इतनी सोच हो तो फिर वे बच्चे क्यों होते ! इस तरह सोच-विचार करना शायद हम बड़ों का काम है।

दूसरे दिन स्कूल में बात फैल गई। गोदया को सभी चाहते थे, सब बच्चे उसी की टीम में खेलना चाहते थे, बड़ी मुश्किल से उसने सबको मनाकर अपनी खेल की टीम बनाई। उधर मधु की टीम में क्लास के तीन-चार बच्चे भी खेलने को राजी नहीं हुए। दूसरी कक्षाओं से बच्चों की मिनतें कर-करके उसने अपनी टीम बनाने की कोशिश की। अध्यापकों को जब पता लगा कि गोदया और मधु की टीमों में मैच खेला जानेवाला है तो उन्होंने दंगा ना हो, इसलिए और बच्चों को बढ़ावा देने के लिए स्कूल के मैदान में ही मैच खेलने को कहा। साथ में खेलों के अध्यापक तथा अन्य अध्यापक गैचों में हाज़िर रहने के लिए भी राजी हो गए।

अब तो मैच ने सारे स्कूल का ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

खो-खो का मैच शुरू हुआ। गोदया की टीम मैदान में आगे-पीछे मुँह करके बैठ गई। मधु की टीम के

बच्चे दौड़ने के लिए खड़े थे। खेलों के गुरुजी ने सीटी बजाई। गोदया ने घेरा पूरा करके इस चालाकी से लड़के को दौब दिया कि उसने फुर्ती से उठ एक साथ दो बच्चों को आउट कर दिया। इसी तरह जल्दी ही वो को छोड़कर सब आउट हुए। पाँचवें और नवें नम्बर के खिलाड़ी थोड़ा-बहुत खेले। पर उनके आउट होने के बाद तो बाक़ी को गोदया की टीम ने देखते-देखते आउट किया।

अब दूसरा भाग शुरू हुआ। मधु की टीम बैठी। गोदया की टीम के खिलाड़ियों को पकड़ना था उन्हें। मधु ने दो फेरे लगाए पर कोई हाथ न आया। थक कर उसने ग़लत खिलाड़ी को खो दिया। वह खिलाड़ी हड़बड़ा गया और जल्दी-जल्दी में उठने के चक्कर में गिर गया। यही सिलसिला चलता रहा। गोदया की टीम के दो खिलाड़ी भी आउट नहीं हो पा रहे थे, जब समय खत्म होने लगा। मधु अब चिढ़ गया था। उसने गोदया का पीछा करना शुरू किया। गोदया ने उसे खूब भगाया। जैसे ही पास आता, वह बीच से निकल भागता। मधु थक कर हाँफ रहा था। बच्चे तालियाँ बजाने लगे। ये तालियाँ गोदया के खेल की तारीफ़ में नहीं, बल्कि उसका मज़ाक उड़ाने के लिए बज रही थीं। मधु को गुस्सा आने लगा। वह और तेज़ भागकर गोदया को आउट करने की कोशिश करने लगा। पर खो-खो में केवल भागना ही नहीं होता। जल्दी-जल्दी सही बच्चे को

खो देकर दौड़नेवाले को पकड़ना होता है। पर मधु को तो बस गोदया को पकड़ने की धुन लगी थी। दोनों घेरे में दौड़ रहे थे। एक बार, दो बार, लग रहा था, मधु का धप्पा गोदया की पीठ पर अब पड़ा था तब। बच्चों ने साँस रोक ली। पर तभी सब ने देखा, मधु धड़ाम से मैदान में गिर गया। जैसे ही पास आकर उसने गोदया को धप्पा मारने के लिए हाथ बढ़ाया, गोदया नीचे झुक कर दूसरी तरफ़ निकल गया था। मधु अपने को सम्भाल नहीं पाया और गिर गया था। समय समाप्त होने की सीटी बज उठी।

खो-खो के मैच में अपनी हार से मधु चिढ़ गया पर क्रिकेट में गोदया से बदला लेगा, इसका उसे विश्वास था। हँसते हुए बच्चों को देखकर बोला, “कल देखना क्रिकेट में क्या होता है ?”

गोदया की हमदर्दी से मधु और चिढ़ गया, एकदम से झल्ला पड़ा, “कोई ज़रूरत नहीं है पूछने की, बड़ा आया हमदर्दी जताने।”

दूसरे दिन स्कूल का मैदान खचाखच भरा था। मधु और गोदया का क्रिकेट मैच अब बड़े दिलचस्प दौर में जा पहुँचा था। मधु और उसके दोस्त क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी थे और गोदया और उसके साथियों ने तो कभी क्रिकेट का बल्ला भी नहीं पकड़ा था। सबको विश्वास था



कि मधु की टीम रन बना बनाकर गोदूया की टीम को थका देगी ।

बच्चों के साथ अध्यापक लोग भी थे ।

मधु ने अपने एक हमदर्द को अम्पायर चुना पर गोदूया की टीम के लोगों ने इस पर आपत्ति उठाई । मधु ज़िद करने लगा कि अम्पायर यही रहेगा । अंत में अध्यापकों ने समझौते की राह निकाली कि दोनों तरफ़ के बच्चों को छोड़ दिया जाय । अम्पायर का काम उन्हीं में से कोई कर लेगा । मधु इस पर कुछ न बोल सका ।

मधु ने टॉस जीता । फिर भी गोदूया की टीम को पहले बल्लेबाज़ी करने को कहा । उसने सोचा, आधे-पौने घंटे में सबको आउट करके, बाद में, खूब रन बनाएँगे ।

शालू, जोशी और शाम जाधव की जोड़ी मैदान में आई । मधु ने अपनी टीम के खिलाड़ियों को चारों तरफ़ फैला दिया और अपने सबसे अच्छे गेंदबाज़ को गेंद पकड़ाई । खुद विकेट कीपर बन कर खड़ा हो गया ।

शाम जाधव बल्ले को रख कर स्टम्प के सामने खड़ा हो गया, शाम ने सेंटर ली, पर सेंटर क्या बला है शाम कहाँ जानता था !

“सेंटर-वेंटर रहने दो, गेंद फेंकने दो ।” उसने

कहा तो सब हँस पड़े । अध्यापक ने आकर शाम को बताया कि कैसे सेंटर लेकर खड़े रहते हैं ।

शाग खड़ा हुआ । पहली गेंद निकल गई । आउट होते-होते शाम बच गया । दूसरी गेंद भी वह खेल नहीं पाया, पर तीसरी गेंद पर ठीक अंदाज़ा लगा कर उसने ठीक से बल्ला घुमाया, और दो रन बनाए । अपनी पारी में दोनों खिलाड़ियों को आउट करने की उम्मीद बाँधे यशवंत ने मुँह लटका कर गेंद दूसरे गेंदबाज़ को दे दी ।

शालू जोशी ने शाम के अनुभव का फायदा उठाया । उसने खूब तरीके से बल्लेबाज़ी की । तीसरी गेंद पर वह ‘कैच’ आउट हो जाता, पर गजानन से कैच छूट गया । बाद में शालू सगंभला और फिर तो उसने दो चौके मारे । इस तरह तीन खिलाड़ियों के आउट होना पर 55 रन बने । अब गोदूया मैदान में आया । उसने देखा था कि 50 रन बनने के बाद मधु और उसके गेंदबाज़ों में कुछ राय-बात हुई थी और उसके बाद से लग रहा था कि गेंद का निशाना स्टम्प नहीं, खिलाड़ी होने लगे थे । केशव के गेंद पहले पेट पर और बाद में छाती पर लगी थी और वह पीड़ा से तड़फता हुआ खेल से निकल गया था ।

गोदूया ने बल्ला स्टम्प के सामने रख दिया और खुद उससे काफी दूर खड़ा रहा ।

“सर अब अगर मेरे पैर पर गेंद लगेगा तो मैं एल. बी. डब्ल्यू तो नहीं हूँगा ?” गोदूया ने पूछा ।

“बिल्कुल नहीं ” । सर ने जवाब दिया ।

“क्योंकि सर, यह बौलर गेंद जा कर खिलाड़ियों पर मार रहा है । इसलिये मैंने केवल बल्ला स्टम्प के सामने रखा है । अब अगर गेंद मुझे लगी तो जाहिर है कि जानकर मारी गई है । फिर वही गेंद उठाकर उसे मारूँगा ।” कह कर गोदूया खड़ा हो गया । दोनों हाथों से बल्ला पकड़े वह काफी दूर खड़ा था, इसके लिए उसे ऐसा झुकना पड़ रहा था कि बल्ला और गोदूया के बीच कमान बन गई थी ।

उस ओवर की 6 गेंद गोदूया के बल्ले से लग कर रुक गई । गोदूया ने मारने की बिल्कुल कोशिश नहीं की, दूसरी ओवर में भी उसने कोई गेंद नहीं मारा, तब एक गेंद उसके घुटने में आ लगी । अगर टीगा खाकर गेंद लगती तो माना जा सकता था कि जानकर नहीं गेंद मारी है पर गेंद सीधी गोदूया के घुटने पर लगी थी । जोर से चोट लगी थी । गोदूया ने गेंद उठाकर पूछा, “सर अब मारूँ उसे !” लेकिन फिर गेंद वापिस फेंक दी । बोलर के पास ।

मधु की टीम के बोलर ने काफी कोशिश की पर गोदूया न आउट हुआ, न ही उसने शॉट मारी ।

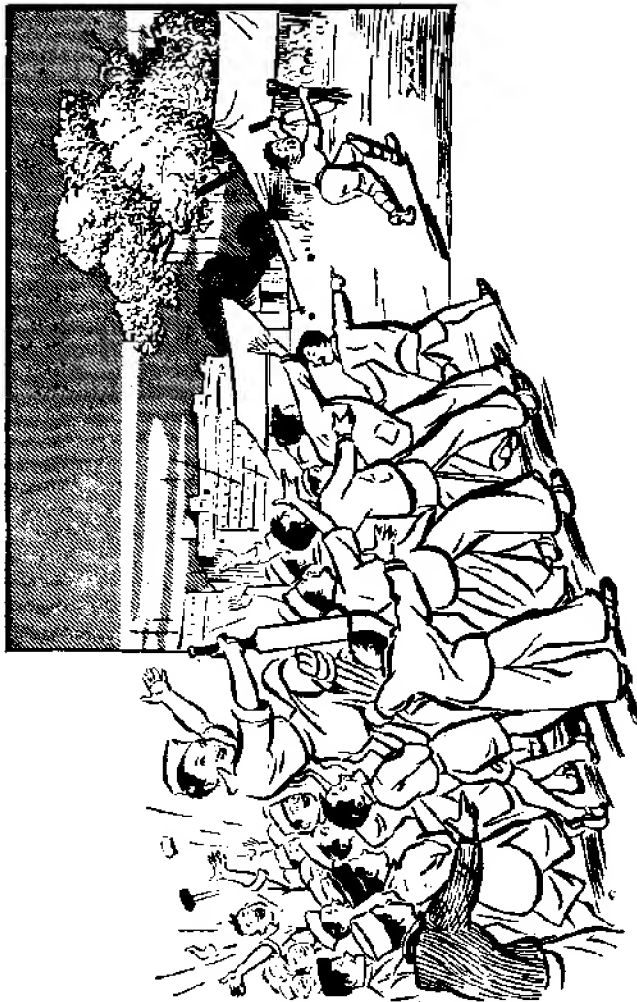
तंग आकर मधु ने कहा, “सर, इसे कहिए गेंद मारे, सिर्फ़ रोक रहा है यह ।”

“क्यों, क्रिकेट में कोई ऐसा कानून है क्या कि गेंद मारना ही है । क्रिकेट में तो गेंद को स्टम्पों से लगने से बचाना है, यह केवल बचाव का खेल है । हमारे देशी खेलों की तरह चढ़ाई का खेल तो है ही नहीं । तो बस बचाव का खेल बचाव की रीति ।” गोदूया ने कहा ।

गोदूया की तकदीर अच्छी थी । आखिर क्रिकेट को कहते ही हैं ‘गेम ऑफ़ चान्स’ या ‘तकदीर का खेल’ । गोदूया आखिर तक आउट नहीं हुआ, बस, डटा रहा । उसके बाद में आए हुए खिलाड़ियों ने बचाव के बजाय शॉट मारने का तरीका अपनाया वरना सारे समय गोदूया की टीम खेलती और मधु को बल्लेबाज़ी का मौका नहीं मिलता । पर उनके खेल से गोदूया की टीम के 128 रन बने ।

“मधु गई तेरी फुस्स ... गोदूया शाबास ...” बच्चे चिल्ला रहे थे । जाहिर था कि बचे हुए समय में मधु की टीम के लिए 128 रन बनाना कठिन था । पर फिर भी मधु के साथियों ने अपना करतब दिखाना चाहा ।

पहले ओवर में मधु के साथ बल्लेबाज़ी कर रहे किसन ने पहले ही गेंद पर चौका मारा । गेंद को रोकने की बजाए गोदूया की टीम का खिलाड़ी तालियाँ ही बजाता रहा ।



मधु शान न जता सका । उसे जो गेंद फेंक रहा था वह ऐसा अनाड़ी था कि चाहते हुए भी मधु उसकी गेंद के साथ बल्ला नहीं जुटा पाता ।

गोट्या की पहली ओवर तो गड़बड़ा गई । पर बाद में वह और उसके साथियों को गेंद फेंकने का तरीका समझ आ गया । और फिर एक गेंद पर किसन ने ज़ोर से शॉट मारा । पर अब खिलाड़ी समझ गए थे कि क्या करना है ! केशव ने गेंद पकड़ी और मारी स्टंप्स पर, वही लगी भी ठीक और दूसरी तरफ से आ रहा मधु आउट हुआ । टीम का कप्तान ही जब बिना रन बनाए आउट हो गया तो फिर बाकी खिलाड़ियों को आउट करना मुश्किल नहीं था । पर इससे पहले ही चिढ़ कर मधु ने बल्ला फेंक दिया, स्टंप्स उखाड़ दिए और “मैं आउट नहीं . . . अंपायर ने ग़लत निर्णय दिया” कहता हुआ मैदान से निकल भागा । फिर क्या था बच्चों ने गोट्या के जयजयकार के नारे लगाकर गोट्या को कंधों पर बिठा लिया । सबने मिलकर खूब जश्न मनाया ।



8. दीवाली का अनोखा आनंद

पिछले साल दीवाली सूनी-सूनी-सी लगी थी । क्योंकि गोट्या यहाँ नहीं था । पर अब जब वह लौटा था तो मेरी पत्नी ने दीवाली के पकवान बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी ।

पकवानों के भरे डिब्बे देखकर मज़ाक में मैंने कहा, “पहले ही इतने सारे रुपये इन पकवानों के बनाने में खर्च हुए । अब कुछ और रुपयों का इंतजाम करना पड़ेगा ।”

“क्यों, किसलिए ?” मेरी पत्नी ने पूछा ।

“इतने सारे पकवान खाने के बाद पेट का जो हाल होगा उसके लिए डॉक्टर के पास तो जाना ही पड़ेगा, उसकी फीस के लिए पैसे तो चाहिए ना ।”

“ओफ हो—त्योहारों के दिन डॉक्टर और बीमारी की बात क्यों कर रहे हो ? पता नहीं हमेशा ऐसा क्यों मज़ाक करते हो ।” मेरी पत्नी झुंझलाकर बोली । हम हँस पड़े ।

दीवाली का दिन आया । सुबह नहाए-धोए । और फिर मेरी पत्नी थाल भर के पकवान मंदिर दे आई । फिर पंडितजी के लिए पकवान अलग थाल में सजाए गये । और फिर सिलसिला शुरू हुआ, छोटी तश्तरियों में पकवान पड़ोसियों के यहाँ भेजने का ।

गोट्या और सुमा खुशी-खुशी पड़ोसियों के यहाँ पकवान ले जा रहे थे । वैसे तो गोट्या अपनी भाभी की हर बात का मज़ाक बनाता था, और उसे फिजूल खर्च बताता । इसलिए मैंने गोट्या से कहा, “क्यों भाई गोट्या इस फिजूल खर्च में तुम अपनी भाभी की मदद कैसे कर रहे हो ?”

“यह फिजूल खर्च थोड़े ही है । पड़ोसियों के यहाँ बने पकवान जान पाने का और व्यापार का क्या बढ़िया तरीका है ? पास की मनु मौसी ने, या राम काका ने क्या-क्या पकवान बनाये हैं, उनके पकवान कैसे बने हैं, यह जानने का आसान तरीका औरतों ने निकाला है । आप चार चीज़ें भेजते हैं तो अपना बढ़प्पन दिखाने के लिए पड़ोसन पाँच चीज़ें भेजती हैं—तो हुआ न फ़ायदा ।”

सुनकर पहले तो थोड़ा-सा हँसी पर बच्चों से इस तरह व्यापारी की पदवी पाकर थोड़ी नाराज हुई। बोली ... “हाँ-हाँ, मैं तो व्यापारी हूँ, थोड़ी-सी चीज़ देकर लोगों से ज्यादा चीज़ें वसूल करती हूँ ! अभी बित्तेभर का है और हग औरतों को व्यापारी कहकर अपनी होशियारी जता रहा है। इस तरह अगर बच्चों को उकसाया जाय तो बच्चे सिरचढ़े तो होंगे ही ...”

बात का बतंगड़ बनते देख, मैंने वहाँ से खिसकना ही ठीक समझा। गोदया ने भी सुमा को आवाज़ देकर पूछा,

“कब चलेंगे सुमा ?”

“जब गर्जी चलो, मैं तैयार हूँ।” सुमा ने कहा।

“कहाँ जाने की तैयारी है ?” मैंने पूछा।

“यह हमारी अपनी बात है, हम नहीं बताते ...” सुमा हँसकर बोली।

“मैं जानता था कि अभी न सही कुछ घंटों में ही अपने आप बच्चे बताएँगे या पता लग जायेगा। पर जब बड़े, बच्चों के ‘सिक्रेट’ जानने की कोशिश करते हैं तो बच्चों को और मज़ा आता है इसलिए मैंने फिर पूछा, “हमें भी शामिल करो न अपने ‘सिक्रेट’ में।”

खाने का बहाना कर रहे थे। मट्ठी का टुकड़ा लेते, तो लड्डू बाँटकर खाते।

“यह क्या मज़ाक है। ठीक से नाश्ता करो, मैं केसर वाला दूध लाती हूँ।”

“हाँ भाभी, दूध हम पी लेंगे, पर अब खाने के लिए मत कहो। और फिर दोपहर को खाने में मेरी पसंद की मीठी पूरियाँ जो आप बना रही हैं, उसके लिए पेट में जगह तो रखनी पड़ेगी,” गोदया ने भाभी को खुश करने के लिए कहा।

“और भाभी, अभी न सही पर बाद में हमें ही तो ये सब पकवान खाने हैं न !” सुमा ने भी हामी भरी।

पर मेरी पत्नी का गुस्सा कम नहीं हुआ। मुझे मालूम था, इस गुस्से का सम्बन्ध बच्चों के रहस्यमयता से कहीं न कहीं जुड़ अवश्य रहा था।

दीवाली की छुट्टियों के दिन बड़े मज़े में गुज़रे। ताश, कैरम, साँपसीढ़ी, लूडो हमने खूब खेला। कभी मैं और गोदया एक तरफ़ हो जाते तो कभी जोड़ी बदलकर मैं और मेरी पत्नी यानी बड़ों और बच्चों में होड़ लगती। कभी औरतों और नर्दों का मुकाबला होता।

जब सुगा और उसकी माँ ने हमें हराया तब मेरी पत्नी गोदया को चिढ़ाते हुए बोली, “हुई न आपकी

‘नहीं। नहीं ... चल सुमा। जल्दी धैला लेकर’, गोदया ने कहा।

बच्चे नाश्ते से पहले ही कहीं बाहर निकल न पड़ें, यह सोचकर मेरी पत्नी ने कहा, “अभी कोई कहीं नहीं जायेगा। मैंने नाश्ता लगा दिया है। दिवाली के दिन बिना नाश्ता किए कोई घर से बाहर नहीं निकलेगा।”

पत्नी का हुक्म सुनकर दोनों एक-दूसरे को देखने लगे। कुछ इशारे भी हुए दोनों में। फिर गोदया हलके से बोला, “भाभी हमें नाश्ता नहीं चाहिये।”

“क्या मतलब। ज्यादा चालाकी की ज़रूरत नहीं है। चुपचाप नाश्ता करके जाओ, जहाँ जाना हो। त्योहार के दिन ना कर रहा है।”

“भाभी सचमुच नहीं चाहिये हमें नाश्ता।” सुमा बोली।

वह गुस्से में मुड़ी। बीच-बचाव करते हुए मैंने कहा, “सुनो बच्चो, त्योहार के दिन भाभी का कहना तो मानना पड़ेगा। पर तुम्हारा भी मन रखने के लिए चलो ऐसा करते हैं, तुमको जो और जितना खाना है उतना ही खाओ। भाभी तुमसे ज़बरदस्ती नहीं करेगी। आओ अच्छे बच्चे कहना मानते हैं।” हम सब नाश्ते में बैठे।

थाल भर-भर कर पकवान—गुज़िया, चकली, चिवड़ा, लड्डू, मट्ठी—हमारे सामने आए। पर बच्चे

बार ! जब देखो तब मर्दों की बढ़ाई करता रहता है। अब हराया न हमारी इस छोटी महिला ने।”

“इसमें औरतों का कैसा बड़प्पन ! दादा ने अपनी गोटी ठीक से नहीं चली, यह उनकी गलती थी। उनकी गलती में आपकी शेखी थोड़े ही है।” गोदया बोला।

“वाह जी वाह ! खेल में दूसरे से गलती करवाकर खुद जीतना यही तो खेल की खूबी है। हमने तुम्हें हराया है। तुम्हारी हार हुई है। अब अपनी हार कबूल कर लो।” सुमा ने ज़ोर दिया।

“पिछले खेल में कहाँ थी यह आपकी खूबी। ताशों में तो हार ही गई आप ? भाभी में तो आप ‘डी ओ एन के इ वाय’ बन गई थीं।” गोदया अपनी हार भला कैसे कबूल करता !

“मैं नहीं बनी थी, भाभी बनी थी।”

“तो भाभी औरत ही है न !” इस तरह की बहसबाज़ी में दिन बीतते गए। खेल-खेल में पकवान खाते-खाते तीन दिन कैसे बीते, पता ही नहीं चला। पहले दिन के बाद बच्चों ने पकवान पर खूब हाथ जमाया, इसलिए उनकी भाभी की नाराजी भी दूर हो गई थी। पर उन्होंने पटाखे न जलाने का अपना निश्चय कायम रखा।

भैयादूज का दिन आया । हमने दोपहर में अपने यहाँ सुमा-गोट्या की भैयादूज मनाई, शाम को मुझे अपनी बहन के यहाँ जाना था ।

“भाभी कितनी उमर से अपनी भैयादूज का तोहफ़ा खुद रख सकते हैं ?” सुमा ने पूछा ।

“क्या मतलब ?”

“मतलब यह कि हर साल गोदू भैया मुझे भैयादूज पर कुछ रुपये देता है । एक घंटे के लिए भी वे मेरे पास नहीं रहते । खाने के बाद वे वापस आपके ट्रंक में पहुँच जाते हैं । इसलिए पूछ रही थी कि टीके के रुपये कब से मैं अपने पास रख सकती हूँ ?”

“तो तू समझती है वे तेरे रुपये मैंने खर्च कर दिये ! वह बूटियों वाला घाघरा क्या मैंने अपने लिए बनवाया है ? और यह झुमके कैसे बने महारानी जी ?”

बात और आगे न बढ़े इसलिए मैंने टोका, “चलो, इस साल टीके के रुपये तुम अपनी मर्जी से खर्च करना ।”

“सच दादा ।” खुशी होकर सुमा बोली ।

“हाँ-हाँ खर्च कर लो । रुपये तो खर्च करने के लिए ही होते हैं ।”

“फ्रीस के पैसे तक तो स्कूल तक ठीक से नहीं ले

जा पाती, रास्ते में खो देती है, और रुपये अपनी मर्जी से खर्च करने चली है ?” पत्नी ने ताना दिया ।

“एक बार कुछ रुपये खो गए मुझसे तो हर बार उस पर ताना क्यों मारती हो ?” सुमा ने गुस्सा होकर कहा ।

“अच्छा-अच्छा यह तय हुआ, सुमा इस साल रुपये अपनी मर्जी से खर्च करेगी । देखे किस पर कैसे खर्च करती है !”

सुमा खुश हुई । हर साल की तरह मेरी पत्नी सुमा को देने के लिए गोदूया को पाँच रुपये देने लगी ।

“मुझे नहीं चाहिये ।” वह झटककर खड़ा हो गया ।

“क्यों ? कम लग रहे हैं ?” मेरी पत्नी ने पूछा ।

“हाँ”

“तो फिर कितने चाहिए ? दस ?”

“हाँ, इस साल मैं सुमा को दस रुपये दूँगा । और मेरे पास हैं दस रुपये,” गोदूया ने शान से कहा ।

“दस रुपये तेरे पास हैं ? वह कैसे ? कहाँ से आए ?”

“हमारे विद्याधर सर लेख लिखते हैं पत्रिकाओं में भेजने के लिए । मैं अपनी अच्छी लिखाई में उन लेखों की नक़ल करता हूँ । इसलिए सर ने ये रुपये दिये ।”

“अपने सर के लिए अगर कुछ काम करो तो उसके पैसे थोड़े न लेते हैं ।” मैंने समझाया ।

“पर दादा, मेरे मना करने पर उन्होंने कहा कि ‘लेखों’ के लिए पत्रिकाएँ मुझे पैसे देती हैं । उनमें से थोड़े मैं तुम्हें देता हूँ, अपने पल्ले से नहीं देता, तुम्हारी मेहनत के पैसे तुम्हें लेने पड़ेंगे । इसलिए मैंने ले लिये ।”

अपनी मेहनत से कमाए हुए रुपये गोदूया सुमा को दे रहा था । गोदूया का सुमा से इतना स्नेह देखकर मेरा मन भर आया ।

गोदूया की तरह विद्याधर सर यानी शिक्षक जी के इस बर्ताव पर भी मुझे गर्व हुआ । अपने शिष्य को उसकी मेहनत के पैसे देकर उन्होंने केवल न्याय ही नहीं किया था पर बच्चों में छोटपन से मेहनत करके कमाने की शिक्षा भी दी थी ।

भोजन और टीके के बाद अपने दस रुपये पाकर सुमा खुश थी । बार-बार रुपये निकाल कर देख रही थी ।

बच्चे खेलने गए और मैं पलंग पर लेट गया तभी

मेरी नज़र दीवार पर पड़ी । देखा चींटियों की कतार ऊपर से नीचे जा रही थी । कहाँ से आ रही हैं इतनी चींटियाँ, यह सोचकर मैं कतार की दिशा में नज़र घुमाने लगा । देखा कि खाने के पास वाले कमरे के ऊपर बनी न्यानी से बड़े-बड़े चींटे और चींटियाँ निकल रहे हैं । लकड़ी की सीढ़ी लगाकर मैं ऊपर चढ़ा । देखा तो अनाज रखनेवाले खाली डिब्बों में दीवाली के पकवान, लड्डू, मडियाँ, गुझिया भरे हैं । इतने सारे पकवान और इस जगह ! हमें हैरानी हो रही थी ।

मैं नीचे उतर कर बरामदे में चाय पी रहा था कि पीछे हरिजन बस्ती में रहने वाले दो बच्चे आँगन में आए । उनसे पूछनेवाला था कि किससे मिलना है कि तभी और पाँच-छः लड़के-लड़कियाँ आईं । देखते-देखते तीस-चालीस बच्चे जमा हो गए ।

हम फिर हैरान ! कुछ ही पलों में गोदूया और सुमा हाथों में बंडल लिए घर में आए । साथ में उनके अध्यापक विद्याधर भी थे ।

फिर सब राज खुल गया । ये हरिजन बस्ती के बच्चे गोदूया और सुमा के नए साथी थे । पता चला, एक दिन सुमा ने साथ पढ़नेवाली हरिजन लड़की से पूछा था, “तेरी माँ ने दीवाली में क्या पकवान बनाए हैं ?” तो उसने उलटकर सवाल किया था, “पकवान क्या होता है सुमा दीदी ?” हमारे लिए तो बाजरे की रोटी और

चटनी है न, रोज़ की तरह दीवाली के दिन भी वही बनेगा ।”

लड़की का जवाब सुनकर सुमा को बड़ा बुरा लगा । “हमारी तरह दीवाली का मज़ा उन्हें क्यों नहीं मिलता ?” उदास होकर सुमा ने गोदया से पूछा ।

इस “क्यों” का पहले तो गोदया को जवाब नहीं मिला । पर जब वह अध्यापक विद्याधर जी के एक लेख की नकल उतार रहा था तब एक वाक्य लिखते-लिखते उसे जवाब मिल गया ।

वाक्य था—अमीर लोग ज़रूरत से ज्यादा खर्च करते हैं और गरीबों को रोज़ की ज़रूरतें पूरी करने में भी परेशानी होती है, अगर सब अपनी ज़रूरत भर ही खर्च करें तो शायद सबकी ज़रूरतें पूरी हो जाँय ।

गोदया ने सोचा, यह सही है । हम लोग अपने-अपने घरों में ज़रूरत से ज्यादा पकवान बनाते हैं । अगर सबसे थोड़ा-थोड़ा माँगकर पकवानों का चंदा इकट्ठा कर इन गरीब बच्चों को खिलाया जाय तो वे भी दीवाली के पकवानों का आनंद ले सकते हैं । यह बात उसने सुमा को बताई । सुमा खुशी से उछल पड़ी । दोनों का इरादा पक्का हो गया । सुमा और गोदया घर-घर पकवानों का चंदा जमा करने निकल पड़े । और जमा किया लड्डू, गुझियाँ और चिबड़े का चंदा । और ऊपर रखे खाली डिब्बों में भरते गए ।

और फिर एक दिन सभी बच्चों को न्योता दे आए ।

विद्याधर जी के आशीर्वाद से दावत प्रारंभ हुई । बच्चों ने खुश होकर पकवान खाए । बाद में अपनी भैयादूज के टीके के रुपयों से सुमा जो कापियाँ और पैन्सिलें लाई थी—उन्हें उन बच्चों में बाँट दिया । सब बच्चे खुश होकर अपने-अपने घर चले गए ।

“यह सब हमसे छिपाकर रखने की क्या ज़रूरत थी ! अगर गुप्तसे कहते तो मैं बना देती इन सब के लिए पकवान ।” मेरी पत्नी ने कहा ।

पर भाभी आप अकेले ही क्यों ? सब लोग अगर अपने में से थोड़ा-थोड़ा देते हैं तो किसी एक पर बोझ नहीं पड़ता और जिसके पास नहीं है उसकी ज़रूरतें भी पूरी हो जाती हैं । उन बच्चों को खुशी भी दी जा सकती है । हमारे सर ने यह बात कही थी । हम इसको आजमाना चाहते थे । उनकी बात सही निकली क्योंकि दो-चार लड्डू या मट्ठियाँ देने से किसी एक पर बोझ भी नहीं पड़ा । न उनके आनंद में कमी आई । साथ में इतने सारे बच्चों को दीवाली का मज़ा आ गया । मैंने और सुमा ने मिलकर यह किया, इसका आनंद हमें भी मिला । गोदया की आँखों में एक खास तरह की चमक आ गई थी ।

और इस तरह हम सबको दीवाली का एक अनोखा आनंद मिला ।

